मिथिलाक बेटी

नाटक

जगदीश प्रसाद मण्डल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-81-90772-03-7

Price Rs.160/-

(for individual buyers)

US $ 25 for Library and Institutions

(India and abroad)

पहिल संस्करण : 2009

दोसर संस्करण : 2013

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर,

नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स-(०११)२५८८९६५७

Website :http ://www.shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :

AJAY ARTS

4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.

Telephone : 2328-8341, 4362-8341

METHILAK BETI by Shri Jagdish Prasad Mandal a play in Maithili language.

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल

फुलवाड़ी लगौनिहार

एवं

नव विहान अननिहारकेँ

समपित...

परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

आमुख

१.

मिथिलाक बेटी नामसँ ई जगदीश प्रसाद मण्डल जीक पहिल नाट्य रचना छी। प्रस्तुत नाटक समस्या प्रधान अछि। मैथिल समाज आ वृहत रूपमे भारतीय समाजमे जातिपाति तँ छैहे, निष्ठावान कर्मनाथ अपन बेटीक विवाह बिना दहेजकेँ करता तइ क्रममे दीर्घ कथोपकथनक माध्यमसँ ई देखौल गेल अछि। ई नाटक पठनीय भऽ सकै छै। विशेषता ई छै जे ई नाटक अपन समाजमे पसरल कुरीतिपर आङुर रखैत अछि। कर्मनाथ विशेष रूपसँ आदर्श चरित्रक रूपमे उभरल मुदा आशा करै छी जे मंडलजी ग्राम्य जीवनमे रहि कऽ अनेक समस्यासँ ग्रसित आ अनेक भाव स्तरपर जीवित लोक-समाजकेँ अप्पन रचना सभमे अहिना रेखांकित करैत रहता।

रामेश्वर प्रेम, निर्मली, जिला सुपौल

२.

श्री जगदीश प्रसाद मंडलजीक मिथिलाक बेटी नाटक पढ़ल, ऐमे आधुनिक सामाजिक समस्याक श्री मंडलजी द्वारा नीक चित्रण भेल अछि। आइ समाज दहेजक बिमारीसँ ग्रस्त अछि। एकरा नव जीवन प्रदान केनाइ सभ व्यक्तिक दायित्व अछि। मात्र कर्मनाथ नै ऐ समस्यासँ लड़बाक काज सभ लोकक सामाजिक धर्म अछि। लेखक अपन भावनाक अभिव्यक्ति मात्र केने छथि। दिशा स्वयं समाजकेँ तकबाक अछि। कथा मूलतः मिथिलाक धरतीक उपज अछि। आ ई खाली मिथिलाक नै, भारतवर्षक समस्या अछि। नाटक विधामे ई कमजोर भलहिं देखा पड़ए मुदा कथोपकथन सामाजिक विरुपताकेँ निरुपित करबामे सक्षम अछि। नाटक लेल कहल गेल अछि- नाटक जीवनक अनुकृतिकेँ शब्दगत संकेतमे संकुचित कऽ तकरा सजीव पात्र द्वारा एकटा चलैत-फिरैत सप्राण रुपमे अंकित कएल जाइत अछि। नाटक जीवनक सांकेतिक अनुकृति नै, सजीव प्रतिलिपि छी।

मण्डलजी मैथिली साहित्यमे सशक्त उपन्यासकार आ कथाकारक रुपमे नवोन्मेष प्राप्त कऽ रहल छथि। हुनकामे भाव, भाषा, शैली आ मोहाबराक जबर्दस्त जमघट अछि। हमर आकांक्षा अछि जे ओ ऐ तथ्य सभकेँ समन्वित रूप दऽ मैथिली साहित्यक श्री वृद्धिमे सहयोग करथि।

रामजी प्रसाद मंडल, निर्मली, जिला सुपौल

अप्पन बात

पहिल पुष्प रहने सफलताक आशा नै मुदा प्रेरणा आ प्रोत्साहनक तँ अछिए। मैथिलीक फुलवारीकेँ पटबैले मालीक जरूरति तँ अछिए। ऐ आशाक संग मिथिलाक प्रसिद्ध नाटककार श्री रामेश्वर प्रेमजी, अपन अमूल्य समय दए मिथिलाक बेटी नाटक पढ़ि हर्षसँ भूमिका लिखबाक कष्ट केलनि। तइले आभारी छी।

श्रुति प्रकाशन दिल्लीक सहयोग एहेन उर्जा हदैमे भरि देलनि जइसँ फुलवारीमे फूल लगबैक उत्साह दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि। श्रुति प्रकाशनक टीमक संग श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक हंस दष्टि लेल कोनो शब्द शब्दाकोषमे नै अछि।

सहयोगी सभकेँ साधुवाद
जगदीश प्रसाद मण्डल

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

1.	कर्मनाथ	प्रशासनिक अफसर	45 बरख
2.	सोमनाथ	कर्मनाथक पिता	65 बरख
3.	रामविलास	सेवा निवृत्ति मिस्त्री	61 बरख
4.	विकास	सेवा निवृत्ति शिक्षक	70 बरख
5.	नूनू	कर्मनाथक भाए	30 बरख
6.	लालबाबू	कर्मनाथक भाए	25 बरख
7.	श्रीचन	किसान	45 बरख
8.	फुलेसर	कर्मनाथक बेटा	17 बरख
9.	राधेश्याम बोनिहार		35 बरख

नारी पात्र

1.	चमेली	कर्मनाथक पत्नी	41 बरख
2.	आशा	कर्मनाथक माए	63 बरख
3.	माधुरी	रामविलासक पत्नी	58 बरख
4.	चम्पा	कर्मनाथक बेटी	19 बरख
5.	जुही	कर्मनाथक बेटी	14 बरख

पहिल अंक

(कर्मनाथक डेरा। बहराक कोठरीमे कर्मनाथ)

कर्मनाथ : (घड़ी देखि) पौने पाँच बजि रहल अछि, किएक ने अखनि धरि बच्चा सभ पढ़ि कऽ आएल। भऽ सकैए जे बाटमे किछु देखए लगल हुअए। ओना हमहूँ आन दिन पाँच बजेक बादे ऑफिससँ अबै छेलौं, मुदा आइ किछु पहिने आबि गेलौं। केना ने अबितौं, आन दिन तेते काज रहै छेलए जे ओकरे निपटबैमे अबेर भऽ जाइ छल, मुदा आइ तँ महगीक विरोधमे कर्मचारी सबहक हड़ताल ऑफिसे बन्न कऽ देलक। खएर जे होउ, किछु कालमे तँ सभ आबिए जाएत।

(कहि कुरसीपर बैस अखबार पढ़ए लगैत)

(चम्पा आ चमेलीक आगमन। दुनूकेँ हाथमे झोरा। एकटा झोरामे चाउर, दालि, तरकारी आ दोसरमे दूधक डिब्बा, चाह पत्तीक डिब्बा, छोट-छोट पुड़ियामे मसाला आ नूनक एकटा पौकेट, आ शीशीमे करूतेल)

चमेली : बजारमे आगि लगि गेल अछि। बाप रे बाप, एना केतौ महगी आबए। (दूधक डिब्बा निकालि) जे बौस कीनैले जाउ, अग्गहसँ बिग्गह दाम। केना लोक कोनो चीज खाएत? जे दूधक डिब्बा बीस रूपैआमे कीनै छेलौं, आइ अट्ठाइस रूपैआमे देलक। जे चाहक डिब्बा (डिब्बा देखबैत) दस रूपैआमे दइ छल ओकर दाम बारह रूपैआ लेलक। कोनो की एक्के-दुइएटा चीजक दाम बढ़ल, सभ चीजक दाम अकास ठेकल जाइए। तहूमे नोकरिया जिनगी! सभ चीज पाइए हाथे हएत। सालमे एक्को दिन एहेन अबन्च नै रहैए जइ दिन केकरो-ने-केकरो तगेदा नै सुनै छी।

कर्मनाथ : केते अनघोल केने छी। बजैत-बजैत होइए जे बताहि भऽ जाइ। जेतै देखू तेतै महगीक चर्च। बजै तँ सभ अछि जे देशव्यापी महगी भऽ गेल। मुदा एकटा बात कहू जे महगी केतए सँ आएल। ओकरा अबैत कियो ने देखलक। अगर जँ अकासक रास्तासँ हवाइ जहाजपर आएल

तँ ओकरा हवाइए फिल्डपर किए ने रोकल गेल। जँ से नै पानिक रास्तासँ आएल तँ पनियाँ जहाजक बन्दरगाहमे ढुकए किए देल गेल। जँ सेहो नै, माटिएक रास्तासँ आएल तँ ओकरा सीमानेपर ने किए रोकल गेल। मुदा से तँ किछु नै भेल, तखनि कोन दोग देने चोर जकाँ महगी चलि आएल। जे एते नम्हर देशमे, एते लोककेँ एक्केबेर चद्दैर जकाँ, ओढ़ा देलक।

चमेली : अहाँ अहिना नून-तेल मिला, बातकेँ बतंगर बना बजै छी। एतबो ने बुझै छिऐ जे बड़का-बड़का लोकक कहब छै जे अधिक उपजाबाड़ी भेलासँ चीजक दाम कम होइ छै आ कम भेने दाम बेसी होइ छै। जइसँ दामक घटती-बढ़ती होइ छै। हरिदम रेडिओओ मे कहै छै। आ अखबारोमे लिखै छै जे खेतो आ करखन्नोमे बेसी पैदावार भेल हैँ। तखनि ई महगी किए भेल?

(माएक बाँहि पकड़ि, डोलबैत चम्पा)

चम्पा : गे माए, तूँ जे कहलीही उ सोझका बात कहलीही जे हमहूँ हाइए स्कूलसँ पढ़ैत एलौं। मुदा ऐकेँ तरमे असल बात अछि। बड़का-बड़का पाइबला वेपारी सभ जे अछि ओ खेतोक उपजा आ करखन्नोक बौसकेँ कीनि लइए आ ओकरा नम्हर-नम्हर गोदाम जे माटिक ऊपरो आ माटिक तरोमे बनौने अछि तइमे डिक दइए। जइसँ बौस घेरा जाइए। घेरेलासँ बौस निङहटि जाइए। तखनि जा कऽ ओ सभ-वेपारी कनी-कनी कऽ कऽ बौसकेँ निकालि-निकालि महग कऽ कऽ बेचैए।

चमेली : (मुँह चमकबैत) गोदाममे जे बौस नुकबैए ओकरा जनता आ सरकार नै देखै छै?

चमपा : ऊँह, गे तेहेन ठीमन रखै छै जे लोकक कोन बात जे कानूनो ने देखै छै। ओ सभ करैत कि अछि जे बड़का-बड़का पनियाँ जहाजमे समान लादि कऽ समुद्रमे ठाढ़ कऽ दइए। तेतबे नै, जे बौस माटिक ऊपरको गोदाममे रहै छै, ओकरा तेहेन कानूनी पेंच लगा दइए जे ओ देशक छी आकि विदेशक, से बुझबे ने करबीही।

चमेली : (पतिसँ, कर्मनाथ दिस देखि) अहाँ हाकिम छिऐ कि माटिक मुरूत। मोटका-मोटका जे कानूनक किताब सभ रखने छिऐ ओ झींगुर खाइले। जखनि कानून हाथमे अछि, पुलिस अछि, जहल अछि तखनि ओकरा

सभकेँ छुट्टा खेलाइले छोड़ि देने छिऐ। पैछला खेप (सात दिन पहिने) अढ़ाइ सएमे जेते समान भेल रहए ओतबे समान कीनैमे आइ तीन सए लागलहैँ अहाँ नोकरिया छी अहूँक दरमाहा अहिना बढ़ैए?

कर्मनाथ : केते, खापड़िक मकइ जकाँ, भरभड़ाइ छी। होइए जे हम खूब बजन्ता छी।

चमेली : उलटे चोर कोतबालकेँ डाँटए। अहीं हमरापर आँखि लाल-पीअर करै छी। एतबो आँखि उठा कऽ नै देखै छिऐ जे अहाँकेँ एते दरमाहा अछि, तखनि ई रामा-कठोला अछि जे बेटी बिआह करै जोकर भेल जाइए मुदा हाथमे एकोटा फूटल कौड़ी नै अछि। (कर्मनाथ नम्हर साँस छोड़ैत) अहींक आँफिसमे जे कम महिना पबैबला संगी सभ छथि, हुनका सभकेँ की दशा होइत हेतनि। तहूमे कम महिना पौनिहारकेँ धियो-पुतो बेसी होइए। जइसँ परिवारो नम्हर रहैए।

(चमेलीक बातक गंभीरताकेँ अंकैत कर्मनाथ तीन बेर चमेलीकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि देखि)

कर्मनाथ : बड़ सुन्नर बात अहाँ बजलौं मुदा हम तँ पढ़बे केलौं नोकरीए करैले। जे आइ बुझै छी भूल भेल। जेना हम जमीनबाला परिवारक छी तेना हमरा खेतीक सम्बन्धमे पढ़ैक चाही छल। जेते धन माटिक तरमे साले-साल बिला जाइए ओकर चौथाइओ नोकरीमे नै कमाइ छी। तेतबे नै, जाधरि सभ अपन-अपन गामक सम्पतिकेँ नै जगौत ताधरि आन ठामसँ जे सम्पति औत ओ या तँ भीख बनि कऽ औत वा कर्जा बनि कऽ। खएर जे होउ! हँ, तँ कहै छेलौं जे लगले तँ हम्मर दरमाहा बढ़त नै। तखनि तँ दुइएटा उपाए दिवस गुजारैले अछि। पहिल अछि जे जेहेन चीज-बौस कीनै छेलौं, तइसँ कनी झूस माने दब कीनू चाहे जेहेन कीनै छेलौं तेहने कनी कम कऽ कऽ कीनू। जौं से नै करब तँ पौल जाएब। कर्जा तरमे पड़ब। ऐ लेल एते आमील किए पीबै छी। महगी कि कोनो हमरे-अहाँटा ले भेलहैँ, जे एते आफन तोड़ै छी। आकि सभले भेलैए। जहाँ धरि हाकिमक बात अछि, हाकिमक मतलब ई नै ने अछि जे जे मन फुरत से कऽ देबै। महगी रोकब हमरा सबहक बुत्ताक बात छी, जे रोइक देबै। जेकर हम नोकरी करै छिऐ ओकरे काज छिऐ महगी आनब।

चमेली : तखनि झुठे एते लाम-काफ किए देखबै छिऐ?

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) दरमाहा तरे देखबै छिऐ। जे होइ छै ओ देखियौ। जखनि अकासे फटल अछि तँ केते सीबै। तखनि तँ मेघ तरकै छै तँ कियो अपना माथपर हाथ दऽ 'साहोर-साहोर' करैए। (चम्पासँ) बुच्ची, चीज-बौस घरमे रक्खू। (दुनू झोरा उठा चम्पा जाइए) अच्छा एकटा बात कहू जे आन दिन बजारसँ सबेरे अबै छेलौं, आइ किएक एते अबेर भेल?

चमेली : (अकचकाए कऽ) से नै बुझलिऐ।

कर्मनाथ : कहबै तब ने बुझबै। हम कि कोनो भगवान छी जे बिनु सुननौं सुनि जाएब।

चमेली : परसूका गप छिऐ। बजारमे एकगोटेक बेटीक बिआह छेलै। बनारससँ बरियाती आएल छेलै। बरियातीओ लाजवाब छेलै। मौगी-मरद सभ रहए। खूब निम्मन बैंडपाटी सेहो छेलै। बैंड-पाटीमे छौड़हरे कौरनेटिया रहए। कहाँदन ओकरा मोछक पम्ह अबिते छेलै।

(बिच्चेमे कर्मनाथ)

कर्मनाथ : कोन खेरहा पसारि देलिऐ?

चमेली : एँह, एतबेमे अगुताइ छी। अस्सल बात तँ आब अछि। खाली सुनैत रहियौ। बड़ी बजंत्री ओ छौड़ा छेलै। बैंड-पार्टी संग बरियातीओक मौगी-मरद आ बजारोक छौड़ा-छौड़ी सभ खूब नाचल। ओही कौरनेटिया संग बजारमे रस्ताक पछबारि भाग जे बड़का गद्दी छै, ओकर बेटी चलि गेलै।

कर्मनाथ : तब तँ ओकरा बापकेँ बेटीक बिआहमे एक्को-पाइ खरचो ने भेल हेतै?

चमेली : अहाँ तँ अहिना आगुएसँ लोइक लइ छिऐ। सुनियौ, कहाँदन ओ छौड़ा नोकरी करैए। ओइ छौड़ीकेँ माए-बाप केतबो रोकलकै मुदा ओ किन्नौं नै मानलकै। ओकरे संगे चलि गेलै।

कर्मनाथ : ओ लड़की केहेन छेलै?

चमेली : वएह सभ बजै छेलै जे ओ-लड़की कौलेजोमे पढ़ै छेलै आ नाचो सिखै छेलै। (अपशोच करैत) से देखियो जे ओइ छौड़ीक गुजर ओइ कौरनेटिया संग केना चलतै! कहाँ ओ धनी-मनीकक बेटी आ कहाँ ओ गरीब घरक कौरनेटिया।

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) गुजर किए ने चलतै। एकटा बजंत्री अछि दोसर नचनियाँ। दुनू मिलि कऽ एकटा पार्टी ठाढ़ कऽ लेत आ गामे-गाम नाचत।

(तइ बीच फुलेसर आ जुहीक आगमन। दुनूक हाथमे किताब) (बेटासँ) बौआ, आइ बीस तारीक भऽ गेल। एक तारीककेँ गाम चलब। तइ बीच तूँ दुनू भाए-बहिन अपन-अपन स्कूल कौलेजमे दरखास्त दऽ कऽ दू मासक छुट्टी लऽ लिहऽ।

फुलेसर : बाबू, अगिला माससँ एक घंटाक स्पेशल क्लास चलतै। ओ तँ छूटि जाएत। तँए, मन होइए जे हम एतै रहि जैतौं।

कर्मनाथ : विचार तँ बड़ सुन्नर छह, मुदा असकर रहब नीक हेतह (बिच्चेमे चमेली पतिसँ)

चमेली : अहाँ तँ दोसर गप करए लगलौं। एकटा गप सठबे ने कएल आ दोसर लाधि देलिऐ।

कर्मनाथ : अहाँ अपना बातकेँ थोड़े पछुआइ देबै। हमहीं अपना बातकेँ पाछू कऽ लइ छी। बाजू...।

चमेली : हँ तँ बरियातीक गप कहै छेलौं ने। उ तँ कौरनेटियाक कहलौं। अहूसँ चोखगर गप आरो अछि।

कर्मनाथ : (मुस्कीआइत) ओइमे कनी तेतरिक रस मिला देबै।

चमेली : अहूँ तँ हद छी। स्त्रीगणक बातकेँ कोनो मोजरे ने दइ छिऐ।

कर्मनाथ : छुछे मोजर देने की हएत। ओ फड़बो करै तब ने।

चमेली : बुझैमे अहूँ बिहाड़िए छी। नट्ठा होइए पुरुख आ कहिऔ मौगीकेँ। अनरनेबा गाछ देखलिऐ हें। मरदनमा गाछ खाली फुलेबे करैए फड़ै नइए। मुदा मौगियाही गाछ जेते फुलाइए तेते फड़बो करैए। हँ, तँ सुनू बरियातीक दोसर गप। बरियाती आबि दुआर लगलै। दुआर लागि जखनि बैठकीमे बरियाती बैसल तँ बरक बाप कहलकै जे पहिने दारू पीब डान्स करब तेकर बाद बिआहक कोनो विधि-बेवहार हएत। मुदा घरवारी ओ बात मानैले तैयारे नै भेल। दुनूक (बरियाती आ घरवारीक) बीच रक्का-टोकी शुरू भेल। दुनूमे सँ कियो पाछू हटैले तैयारे नै। ओम्हर बैंड बाजा गड़गड़ाइते रहए। दुनूक बीच कहा-कही होइत-होइत

पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। पकड़ा-पकड़ी होइते पटको-पटकी आ मुक्की-मुक्की शुरू भेल।

कर्मनाथ : (हँसैत) बाह-बाह, तखनि तँ कुरथी दौन हुअ लगल हएत।

चमेली : अहाँ तँ बाजै ने दइ छी, बिच्चेमे लोइक लइ छिऐ। पटका-पटकी करिते टेन्टक बाँस घीचि-घीचि एक-दोसरकँ मारए लगल। केतेकँ कपार फुटलै। तइ बीच हड़हड़ा कऽ टेन्ट खसल। सभ ओइ तरेमे झँपा गेल। केकरो निकलिए ने होइ। जहिना महजालमे माछ फँसैए, तहिना।

कर्मनाथ : मरदे-मरदी सभ रहै आकि मौगीओ सभ रहए।

चमेली : सभ रहै की। केतए के ओंघराएल रहै से कोइ देखै। बड़ीकाल पछाति गौआँ सभ समेना हटौलक। समेना तरमे जेते गोटे रहै सभ गरदासँ नहा कऽ गरदे रंगमे रंगि गेल। पी कऽ सभ बुत्त रहबे करए। टगैत-टुगैत सभटा बरियाती निफाहेमे जा-जा बैसल। थोड़े खान जब हवा लगलै तब बारह गोटे (बरियाती) अपन-अपन बैग-एटैची लऽ-लऽ जाइले तैयार भऽ गेल। घरवारी सभ गोढ़ियाबए लागल। मुदा कियो मानैले तैयारे ने।

कर्मनाथ : तब तँ बेचारे बरियाती सभकँ नै सुतरलै।

चमेली : एँह, एतबे भेलै। जेते बजरूआ पौकेटमार सभ रहै सभ सबहक (बरियातीक) रूपैओ, मोबाइलो आ आनो-आनो चीज छीनि कऽ निकलि गेल। रौतुका मसीम रहबै करै।

कर्मनाथ : बरियातीक सोंखरि ओराएल कि आरो अछि।

चमेली : एतबेमे अगुता गेलौं। अच्छा, एकटा आरो कहि दइ छी। बरियाती सभ तेते छुड़छुड़ी आ फटाका अनने रहै जे दुआरपर पहुँचिते, गदमिशान उठा देलक। लड़कीक नन्ना ओहीकाल पैखाना गेल रहथि। एकटा बड़का फटाका ओइ पैखाना कोठरीक देबालमे एकटा बरियाती मारलक। से कहाँदन ओ फटाका (बम) गुंगुंआ कऽ तेते जोरसँ अवाज केलकै जे ओ बेचारे धड़फड़ा कऽ भागए लगला। केबाड़ बन्न रहै। बेचारेक होश तँ उड़ि गेल रहनि, देबालेमे टकरा गेला। कपारो फुटि गेलनि आ चोटसँ चोन्ह आबि गेलनि। चोन्ह अबिते तिलमिला कऽ खसला कि दहिना पएर पैखानाक नालीमे फॅंसि गेलनि बड़ीकाल पछाति

जखनि दोसर गोरे पैखाना जाए लगला कि केबाड़ बन्न देखलखिन। थोड़ैकाल ओतै ठाढ़ रहथि, मुदा कोनो सुनि गुनि नै बूझि हल्ला केलखिन। तखनि केबाड़क छिटकिल्ली अलगौल गेल। केबाड़क छिटकिल्ली अलगैबिते, बुढ़ाकेँ अचेत-भेल पड़ल देखलखिन।

कर्मनाथ : (हँसैत) तब तँ बिआह संग सराधोक जोगार लागि गेलनि।

चमेली : अहाँ तँ अहिना अनका दुखकेँ दुखे ने बुझै छिऐ।

कर्मनाथ : हम की अहाँ जकाँ अनकर सुख देखि कऽ थोड़े नचै छी। सुख-दुखक बीच जिनगीक रास्ता छै। तँए, जिनगी जीबैलै सुख-दुख अङेज कऽ चलए पड़ै छै। जे यात्री सुखमे मगन भऽ जाएत आ दुखमे विचलित ओ जिनगीक यात्रा केना सफर कऽ सकैए। छोड़ू दुनियाँदारीक गप। अपन जिनगीक गप करू। (चम्पाक आगमन) भने चम्पो आबिए गेलि।

फुलेसर : दू मासक छुट्टी लऽ कऽ की करबै, बाबूजी?

कर्मनाथ : चम्पाक बिआह करैक विचारसँ गाम जाएब। मुदा तूँ जे कहने छेलह जे स्पेशल क्लास चलत तँए रहि जाइक विचार होइए। बड़ सुन्नर विचार छह, मुदा ई बात बुझए पड़तह जे हर मनुखकेँ पहिल कर्तव्य होइत जिनगीक रक्षा। जीबैत रहबह तखने बूझि पड़तह जे दुनियाँ छै, नै तँ किछु नै। पढ़ैक खियालसँ तोहर विचार नीक छह। मुदा एकटा बात कहि दइ छिअ। हम अफसर छी तँए विशेष अनुभव अछि। अखनि अपन परिवारक बीच छी तँए बजैत एक्को पाइ असोकर्ज नै भऽ रहल अछि। जँ अखनि सरकारक कुरसीपर रहितौं वा लोकक बीच, तँ नै बजितौं।

जुही : बाबूजी, केते काल सरकारी आदमी रहै छिऐ?

कर्मनाथ : बाउ, जे सवाल पुछलह, ओकर उत्तर साधारण नै अछि। अखन परिवारक काजक विचार करैक अछि, तँए तोरा सवालक उत्तर नीक नहाँति नै दऽ सकबह। निचेनमे दोसर दिन बुझा देबह। अखनि थोड़े इशारामे कहि दइ छिअह। अखन जे अपना देशक स्थिति अछि, ऐमे कियो सुरक्षित नै अछि। जेना सभ दिन अपहरणक घटना सुनै छहक। घटनामे की सुनै छहक जे पाइक दुआरे अपहरण (फिरौती) होइ छै। ईहो होइ छै। मुदा एतबेटा नै होइ छै। आँखि उठा कऽ

देखबहक तँ बूझि पड़तह जे बिनु पाइओबलाक अपहरण होइ छै। तेतबे नै, पाइबला तँ पाइ दऽ कऽ जानो बचा लइए मुदा बिनु पाइबलाकेँ जानक अपहरण होइ छै।

जुही : ई बात लोक कहाँ बजैए।

कर्मनाथ : लोककेँ अखबार आ रेडिओ पढ़बै छै। तँए जे अखबारमे पढ़ैए से दोसरकेँ पढ़बैए। मुदा अस्सल बात ऐसँ आगू अछि। जे थोड़-थाड़ कहियो रेडिओओ आ अखबारो कहिऔ दइए आ बेसी नहियेँ कहैए। हँ, तँ कहै छेलियऽ जे अपहरण भेलापर बिनु पाइबलाक जान नहियेँ बँचैए। तँए, ई बात बुझए पड़तह जे के केकर जान लइले, खून पीबैले तैयार अछि से कहब कठिन। (बेटासँ) तूँ कहबह जे अहाँ तँ गलत काज कहियो ने केलौं आ ने करै छी, तखनि हमरा किएक किछु हएत। मुदा ऐ सवालक जवाब बुझैले ऐ बातपर नजरि देमए पड़तह जे जहिना दिनक विपरीत राति होइए, धनिकक गरीब आ सुखक विपरीत दुख होइए। मुदा एकरे उलटा कऽ देखबहक तँ बूझि पड़तह जे जहिना दिनक विपरीत राति होइए तहिना रातिओक विपरीत दिन होइए। तहिना धनिको आ सुखोक होइ छै।

जुही : बाबूजी, हम ई बात नै बूझि सकलौं जे विपरीतक माने की?

कर्मनाथ : बाउ, अखनि हम दोसर काजक गप करए चाहै छी, तँए अखनि तोरा प्रश्नक जवाब नीक जकाँति नै दऽ सकबह। मुदा तोरा जे शंका भऽ रहल छह, ओ हमहूँ बूझि रहल छी। अखनि एतबे बूझह जे दिन-राति प्रकृतिसँ जुड़ल अछि, तँए ओ हेबे करत। एक-दोसरक विपरीत रहबे करत। मुदा धनीक-गरीब आ सुख-दुख से नै अछि।

जुही : बाबूजी, अहाँ जे कहलिऐ तइसँ हमर मन नै मानलक।

कर्मनाथ : (जुहीक बात सुनि कर्मनाथ मोने-मन सोचए लगलथि जे जखनि हाइ स्कूलक बच्चाकेँ हम संतुष्ट नै कऽ सकलौं, तखनि परिवार आ समाज तँ बड़ नम्हर होइए। सोचि-विचारि)

बाउ, एकठाम भोज भेलै। भोज नै भेलै, पाँच गोटे आन मुलुकसँ एक गोटे ऐठाम एलखिन। आन मुलुकक रहने नम्हर पाहुन भेलखिन। ओ घरवारी (जिनका ऐठाम आएल रहनि) खाइ-पीबैक नीक ओरियान

केलनि। आन मुलुकक पाहुन बूझि अपनो दस समांगकेँ खाइक नोत देलखिन। खाइक सभ वर्तन (थारी, लोटा, गिलास, बाटी, चम्मछ) सोनाक रहए। खेला-पीला पछाति अपन (घरवारीक) एकटा समांग एकटा चम्मछ चोरा कऽ जेबीमे रखि लेलक। घरवारी देखि लेलखिन। देखला पछाति घरवारीक मोनमे हुअ लगलनि जे जँ कहीं पाहुनो सभ देखि नेने होथि। मुदा दोसर दिस अपन मुलुक आ समांगक प्रश्न छेलनि। असमंजसमे बेचारे पड़ि गेला। तत्-मत् करैत ओ (घरवारी) एकटा मैजिक केलनि।

जुही : खाइए कालमे मैजिक केलनि।

कर्मनाथ : हँ। आगू सुनह। मैजिक ओ ई केलनि जे कहलखिन- जिनका जेबीमे जे वस्तु अछि से हम देखै छी। सभकेँ आश्चर्य भेलनि। अपन समांग दिस इशारा करैत कहलखिन जे हुनका जेबीमे एकटा चम्मच अछि। जइ समांगक नाओं कहलखिन, ओ भड़कि उठलथि। दोसर गोरे, जेबीमे हाथ दऽ चम्मच निकालि टेबुलपर रखि देलखिन। तँए बाउ, तूँ जे प्रश्न केलह ओ अहूसँ नम्हर मैजिक अछि। आब तूँ चुप रहऽ। आगूक गप बढ़बए दैह।

जुही : भैयाक सवालक जवाब अधखड्डुऐ रहि गेल छन्हि।

कर्मनाथ : बौआ, समए एहेन परिस्थिति पैदा कऽ देलक हेँ जे कियो अपनाकेँ सुरक्षित नै बुझैए। सचमुच अछिओ नै। अखनि एकटा अपहरणक चरचा केलियऽ। एहेन-एहेन अनेको अछि। एक राज्यक लोक दोसर राजबलाकेँ दुश्मन बुझैए। दुश्मन संग जेहेन बेवहार होइ छै, से करबो करैए। तेतबे नै, एक सम्प्रदायबला दोसरकेँ दुश्मन बुझैए। तहिना एक जातिक लोक दोसर जातिकेँ बुझैए।

जुही : तेना ओझड़ा-पोझड़ा कऽ कहलिऐ जे हम किछु बुझबे ने केलौं।

कर्मनाथ : अपन देश विभिन्न राज्य, विभिन्न सम्प्रदाय आ सैकड़ो जातिमे बँटल अछि। ऊपरसँ सभ कहैए जे हम सभ एक देशक बासी छी। तँए, मिलि-जुलि कऽ रहक अछि। मुदा से थोड़े अछि। एक राजबला दोसर राजबलाकेँ मारि-पीटि, बहु-बेटीक इज्जत लूटि, कमाएल पाइ लुटै पाछू लागल अछि। तहिना आरो सभ अछि।

जुही : तैयो अहाँ ओझराइले बात कहलिऐ।

(एक टकसँ जुहीपर नजरि राखि कर्मनाथ कनी काल गुम्म रहि)

कर्मनाथ : बाउ, अखनि धरि तूँ सभ शहर-बजारमे रहलह, तँए नै देखै छहक। हमरा तँ गमैया लोक सभसँ गप-सप्प होइए किने। सुनह, गाम सभमे की होइ छै; एक जातिक लोक (जे बुतगर अछि) दोसर जातिक लोकक (जे अब्बल अछि) बहु-बेटीकेँ दिन-देखार इज्जत लुटैए। तहिना एक सम्प्रदायबला दोसर सम्प्रदायबलाकेँ।

फुलेसर : (नम्हर साँस छोड़ैत) बाबूजी, जे बात अहाँ आइ बिकछा कऽ कहलिऐ, ओइ बातदिस हम्मर नजरि आइ धरि नै गेल छल।

कर्मनाथ : अगर जँ अखनि धरि तोहर नजरि ऐ बात दिस नहियेँ गेल छेलह तँ ओहो कोनो बड़ भारी गलती नहियेँ भेल छेलह। किएक तँ अखनि धरि तूँ किताबक बीच रहलह, दुनियाँ दारीक बात थोड़े बुझै छहक। मुदा एकटा बातपर हरिदम आँखि-कान ठाढ़ कऽ कऽ राखए पड़तह जे सिरिफ किताबेक ज्ञानसँ जिनगी नै चलैए। जिनगी लेल दुनू (किताबो आ बाहरीओ) ज्ञानक जरूरत होइए।

फुलेसर : बाबूजी, अखनि देखै छिऐ जे छोटका स्कूलक विद्यार्थीसँ लऽ कऽ कौलेज धरिक विद्यार्थी, सिनेमा आ खेल-कूदक सभ बात जनैए मुदा अपन परिवार, समाज आ वंशक विषयमे किछु ने जनैए। बहुत दिनसँ मोनमे अबैए जे अपन परिवारक सम्बन्धमे अहाँसँ पुछी। मुदा समैक एहेन उटपटँग रूटिंग बनि गेल अछि जे पुछैक गरे ने लगैए।

कर्मनाथ : (मुस्कीआइत) अपनो ई इच्छा दस बरख पहिनेसँ मोनमे अछि, किएक तँ ऐ शरीरक कोनो ठेकान नै अछि। कुम्हारक बनौल माटिक काँच वर्तन जकाँ मनुक्खो अछि।

(बिच्चेमे)

चमेली : बेटा फुल, एकटा बात आरो जोड़ि दहक जे दू परिवार, दू समाज आ दू वंशक योगसँ नव परिवारक उदय होइए। तँए, दुनूकेँ जानब जरूरी अछि।

कर्मनाथ : (हँसैत) हँ तँ पहिने अहीं परिवारक खेरहा कहै छी। पुरुष-नारीक संयोगसँ नव मनुखक जनम होइए। एकर अतिरिक्त जे सभ अछि ओ बाहरी-ऊपरी छिऐ। तँए, अखनि एतबे कहब। मुदा हमरा संग जे अहाँक बिआह भेल, ओ बच्चा सभकेँ जरूर कहि देबै।

जुही : (थोपड़ी बजबैत) पहिने यएह कहिऔ बाबूजी। तखनि आन बात कहबै।

कर्मनाथ : (मुस्की दैत पत्नीसँ) हम अहाँ छोड़ि बच्चा सभकेँ कहै छिऐ। तँए, बीचमे रग्गड़ नै ने ठाढ़ कऽ देबै?

चमेली : (मुँह चमकबैत) हम बड़ रगड़ी छी, किने।

कर्मनाथ : अपना की बूझि पड़ैए। अहीं सन लोकक सम्बन्धमे कहल गेल अछि जे नाक नै रहैत तँ की सभ खेइतौं, तेकर कोनो ठीक नै।

चमेली : छुछुनरि होइए पुरुख आ दुसिऔ मौगीकेँ।

कर्मनाथ : पुरुष की छुछुनरि होइए?

चमेली : बजार जाइ छी तँ देखै छिऐ जे जहाँ पुरुख कोनो स्त्रीगणकेँ देखत कि अनेरे ओकर जाँघक दिनाइ चुलचुलाए लगै छै।

कर्मनाथ : अहाँ कोनो डाक्टर छी जे दिनाए देखि दबाइ सोचए लगै छी। अहाँ दिनाए देखै छिऐ केना?

चमेली : आँखिए छिऐ। ओकरा पकड़ि कऽ रखबै, से हएत।

कर्मनाथ : अच्छा बूझि गेलौं। अहूँकेँ अपन बिआहक बात सुनैक मन अछि, तँ सुनू। जखनि हम बी.ए. पास केलौं, तखनि बाबूजी बिआह करैक चर्च चला देलनि। सभ दिन दू-चारि कन्यागत आबए लगलथि। हम दरभंगेमे रहैत रही। एम्हर बाबूजी एकठाम बिआहक बात पक्का कऽ लेलनि। जे हम पछाति बुझलिऐ। कहाँदन ओ कन्यागत भरिपोख द्रव्य आ कन्याक खोंछिमे बीस बीघा जमीन दइले तैयार रहथि। मुदा अंतिम बात हमरेपर अँटकल रहए। जेठ मास। गोटे-गोटे गाछमे गोटिपङरा आम फड़ल रहै नै तँ नहियेँ जकाँ फड़ल रहए। दस बजे पछाति बाधमे लू नाचए लगै। जेना बूझि पड़ए जे खेत सभमे आगिक चिनगारी जकाँ नाचि रहल छै। हम खा कऽ दरबज्जेक ओसारक कोठरीमे रही। ओसारक दुनू भाग (उत्तरो आ दछिनो) दूटा कोठरी बनल रहै आ बीचमे खाली रहए। ओइ खाली ओसारमे एकटा मोथीक सोफ (नम्हर बिछान) बिछौल रहै छेलै। सतासीक बाढ़िमे ओ दरबज्जा खसि पड़ल। करीब बारह बजे तोहर (बेटा-बेटी) नन्ना आबि कऽ, ओइ सोंफपर चारूनाल चीत भऽ कऽ ओंघरा गेला। ओंघरेलापर जे बिछान (सोफ) खड़बड़ेलै तँ हमहूँ कोठरीसँ बहरेलौं, तँ देखलिऐ जे एक गोटे दुनू बाँहिकेँ मोड़ि माथ

तरमे नेने, आँखि मूनि कऽ पड़ल छथि। आ कनी हटा कऽ मत्थे सोझे एकटा बटुआ रखने छथि।

जुही : बटुआ केहेन होइ छै, बाबूजी?

कर्मनाथ : (मुस्कीआइत) बटुआ कपड़ाक बनै छै। दरजी सभ सीबैए। कोठरीनुमा ओइमे हन्ना सभ बनल रहै छै। जेकरा लोक डाँरक डोराडोरिमे बान्हि कऽ रखैए। ओइमे अमलोक वस्तु आ पाइओ-कौड़ी रखैए। हमरो हड़ल ने फुड़ल, ओतै बैस कऽ बटुआ उठा देखए लगलिऐ। एँह, की कहबह अजीव खजाना बटुओ होइए। जहिना लोक पीढ़ी, केबाड़ आ सन्दूक सभमे रंग-बिरंगक चित्र बनबबैए तहिना ओइ बटुआक ऊपरमे एकटा इनार बनौल रहए। ओइ इनारपर पाँचटा जनिजातिक चित्र बनौल रहए। एक गोटे इनारमे डोल खसबैत। दोसर उगहनि पकड़ि डोल ऊपर करैत। तेसर काँखतरमे घैल रखने। आ बाँकी दुनू इनारक दुनू भाग ठाढ़ भऽ कऽ बाँहि फड़का-फड़का झगड़ा करैए।

फुलेसर : इनारो-पोखरिमे लोक झगड़ा करैए।

कर्मनाथ : (ठहाका मारि) हौ, इनार-पोखरि तँ स्त्रीगणक लड़ैक अखड़ेहे छी (पत्नी दिस देखि, मुड़ी डोला हँसि) उठा-पटक तँ स्त्रीगण कम करैए मुदा गरिखर बेसी होइए। सात पुरखाक नाओं आ सातो पुरखाकेँ कोन गारि केकरा लगतै, से सभकेँ बूझल रहैए।

चमेली : (मुँह चमकबैत) इनार-पोखरि ढाठैए पुरुख आ झगड़ाउ होइए मौगी। (मुड़ी डोलबैत) निरलजकेँ ने लाज, पेट भरला से काज। पुरुख नीक रहतै तँ मौगी अधला भऽ जेतै, की?

फुलेसर : बटुआ जे उठौलिऐ से ओ नै बुझलनि।

कर्मनाथ : (उदास होइत) ओ केना बुझितथि। ओ कोनो रौदक जरल रहथि, ओ तँ जिनगीक ठोकरसँ घाइल बटोही रहथि। चिन्ता आ दुखक अथाह समुद्रमे डुमल रहथि। जइसँ निकलैक कोनो रस्ते ने देखथि।

जुही : बटुआमे की सभ रहनि?

कर्मनाथ : (मुस्कीआइत) जखनि बटुआक डोरा दुनू हाथे पकडि खेललिऐ कि भक दऽ एक्केबेर नअटा मुँह बाबि देलक। नबो हन्नामे नअ रंगक बौस। पहिल हन्नामे नोइसिक डिब्बा। नोइसिक डिब्बाकेँ उठैबिते गमकि उठल। गमक देखि हमरो मन भेल जे कनी निकालि कऽ नाकमे लगा

ली मुदा फेर मोनमे आएल जे नाकमे नोइस लगाएब तँ छींक हेबे करत। जँ कहीं जोरसँ छिक्का भेल आ ओ आँखि खोललनि, तँ देखिए जेता। तँए नोइस नै लगेलौं।

फुलेसर : नोइस नै लगेलिऐ?

कर्मनाथ : हँ, लगौलिऐ। पाछू। दोसर हन्नामे छलिया सुपारी। शुद्ध कालापानी, चारिटा। खूब नम्हर-नम्हर। तेसर हन्नामे पानक पनबट्टी। चारिममे दूटा जरदाक डिब्बा। एकटा हरिशंकर काली-पत्ती आ दोसर पान सए नम्बर, पीली पत्ती। पाँचममे चानीक रूपैआ। ओ नीक जकाँति नै देखलिऐ। मुदा कम्मे बूझि पड़ल। छठममे लंग-इलायची। सातममे बिलैंती तमाकुल। आठममे एकटा चुनौटीमे चून आ दोसर शीशीमे बुकल खएर। नवममे रामपट्टीक बनौल सरोता। नबो हन्नाकेँ कऽ देखि नोइसिक डिब्बासँ कनी नोइस निकालि, चुटकीमे रखलौं। बटुआ बन्न कऽ कऽ रखि नाकमे नोइस लगेलौं। नोइस लगबिते खूब जोरसँ छिक्का भेल। जहाँ छिकलौं आकि ओ फुर-फुरा कऽ उठि, बैस रहला। हमरा नाकमे सुरसुरी लागल तँए नाक मलैत रही।

फुलेसर : नाना किछु बजला नै?

कर्मनाथ : ने ओ किछु बाजथि आ ने हम किछु पुछियनि। हुनक बगए आ शरीरक रूप देखि हम्मर बोली बन्न रहए। मोनमे ढेरो रंगक सवाल सभ उठैत रहए। जहिना कोनो राही-बटोही बिनु खेने-पीने रास्ता-बाट चलैत रहैए, मुदा रूकैक नाओं नै लइत, तहिना बूझि पड़ल। बड़ीकाल पछाति, मनकेँ असथिर करैत पुछलियनि, अपने केतए रहै छिऐ? नीक जकाँति नै चीन्हि रहल छी। आँखिक नोर पोछैत ओ कहलनि, बौआ, अहाँ अखनि बच्चा छी, तँए हम अपन सभ बात तँ नहियेँ कहब, मुदा एते जरूर कहब जे जइ धनुषकेँ तोड़ि राम वीर भेला, ओइ धनुषकेँ मिथिलाक बेटी-सीता बामा हाथे उठा बाहरै-नीपै छेली। ओइ मिथिलाक आइ एते पतन भऽ गेल अछि जे बेटीक हाथ पकड़निहार, बिना रूपैआ नेने कियो नै अछि।

फुलेसर : (चौंक कऽ) बड़ भारी बात कहलनि, बाबूजी?

(चमेली, चम्पा आ जुहीक आँखिमे नोर आबि गेल)

कर्मनाथ : हमर करेज दहलि गेल। आँखि भारी भऽ गेल। मुँहक बकार बन्न भऽ गेल। हम्मर आँखि कखनो हुनक मुँह देखैत तँ कखनो बगए। तखने पितोजी एला। पिताजीकेँ तोहर नन्ना कहलखिन, जे एकटा कूल-शील कन्याक भार उतारि देल जाए। जैपर पिताजी तुरूछ भऽ कऽ जवाब देलखिन जे कूल-शील लऽ कऽ हम धो-धो चाटब। द्रव्यक जुग छी। टका धरम टका करम छी। अहाँ अपन बेटीक प्रति केते खरच करए चाहै छी। जहिना पानि बरफ बनैत, तहिना हम्मर कोमल हृदए कठोर बनए लगल। मोनमे अन्हर-बिहाड़ि उठए लगल। मुदा चुप रही। तोहर नन्ना कहलखिन, हम्मर हालत पाइ-कौड़ी खरच करै जोकर नै अछि। अपनेक पएर पकड़ि कहै छी जे एकटा मुइल बापक बेटीक भार उतारि देल जाए। द्रव्यसँ तँ अपनेक इच्छा पूर्ति हम नहियेँ कऽ सकब, तखनि एकटा नोकरनी परिवारमे जरूर देब। हुनकर बात सुनि पिताजी उठि कऽ बाड़ी दिस विदा भऽ गेलखिन। हमरा हुअए जे बोम फाड़ि कऽ कानी। मोनमे विचित्र स्थिति पैदा लऽ लेलक। एक दिस पिता दोसर दिस निरीह कन्या।

फुलेसर : नाना बैसले रहलथि कि उठि कऽ चलि गेला।

कर्मनाथ : बैसले रहलथि। उठैक साहसे ने होन्हि। मुँह करिछौन भेल जाइत रहनि। लगले-लगले हाफी करथि। मिरमिराइते हम पुछलियनि, अपने केते खरच करए चाहै छिऐ। ओ कहलनि, बौआ, जखनि अहाँ पुछलौं तँ हम अपन दुख कहै छी। हम दू भाँइ छी। हमरासँ जेठ भाय छथि। हम पढ़लौं-लिखलौं तँ बेसी नै मुदा अखड़ाहापर जरूर जाइ छेलौं। दुनू भाँइक बीच जखनि बँटवारा हुअ लगल तखनि ओ खेत-पथार तँ बाँटि देलनि, मुदा घरक वर्तन-बासन, गहना-जेबर आ नगद-नारायण किछु नै देलनि। एक दिन हम खिसिआ कऽ कहलियनि। हुनको दाँव-पेंचक दाबी। ओहो ओहिना जोरसँ कहलनि जे जे बँटैबला छेलह से बाँटि देलियऽ आब किछु ने देबह। हमरो अखड़ाहा परहक ताउ रहबे करए। दरबज्जेपर उठा कऽ पटैक पान-सात थापर मुँहमे लगा देलियनि। कहि दुनू हाथ माथपर लऽ चुप भऽ गेला।

फुलेसर : किए चुप भऽ गेला?

कर्मनाथ : थोडेकाल पछाति फेर कहए लगला। हौ बाउ, पेंच-पाँच तँ हम जिनगीमे कहियो सीखिलौं नै। कोटमे केसो कऽ देलक आ गौओं सभकेँ मिला लेलक। दुनू दिस हम फँसि गेलौं। बलजोरी लोक सभ जजातो काटि लिअए, बाँसो-गाछ काटि लिअए आ आमो तोड़ि लिअए। तारीकपर जाइ तँ एककेँ तीन ओकिलो-मुन्सी ठकि लिअए। केस हारि गेलौं। जेकरा चलैत छह मास जहलोमे रहलौं। कोनो करम बाँकी नै रहल। सभ सम्पति नष्ट भऽ गेल। हारि कऽ बेटा पड़ा कऽ दिल्ली चलि गेल। एहेन स्थितिमे बेटी बिआह करै जोकर भऽ गेल अछि।

चमेली : (नोर पोछैत) हे भगवान, एहेन दिन केकरो नै दिहक।

(चम्पा आ चमेली माएक मुँह तकैत आ फुलेसर बापक मुँह)

फुलेसर : बाबा घूमि कऽ एलखिन आकि नै?

कर्मनाथ : ने घूमि कऽ एलखिन आ ने केतौ गेलखिन। अंगनाक पछुआरक रस्ता देने आबि कऽ अढ़मे बैस गेलखिन।

फुलेसर : सोझहामे किए ने एलखिन?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानथि। मुदा हम्मर मन हुनकासँ हटए लगल आ हिनका (ससुर) दिस झुकए लगल। मोने-मन सोचए लगलौं जे अखनि जँ हम बलजोरी (पिताक बिना विचारे) बिआह कऽ लइ छी तँ परिवारमे जबरदस विबाद ठाढ़ हएत। जँ बिआह करैसँ इनकार करै छी तँ दरबज्जाक इज्जत चौपट हएत।

जुही : दरबज्जाक इज्जत की छिऐ?

कर्मनाथ : बाउ, दरबज्जा अंगनाक नाक होइत। आंगन बेक्ति-विशेषक बूझल जाइत, जबकि दरबज्जा दसगरदामे बदैल जाइए। आंगन आंगनवालीक (पत्नीक) बूझल जाइत जबकि दरबज्जा द्वार (दुआर) होइत। केकरो आंगनमे पुरुखक आगमन आंगनवालीक आदेशसँ होइत जबकि दरबज्जा लेल आदेशक जरूरत नै। सबहक लेल हरिदम रहैत। पुरुखक परीक्षाक केन्द्र दरबज्जा छी। परिवारमे जेहेन पुरुख रहत दरबज्जाक इज्जत ओइ रूपक हएत। हमर-अहाँक पुरुखा ऐ इज्जतकेँ बुझै छेलखिन, तँए, बहुतो गोटे ऐ प्रतिष्ठाकेँ उच्च सीढ़ी धरि मर्यादित बना कऽ रखलनि। एहेन-एहेन हजारो पुरुख भेल छथि जे कनैत आएल

मनुखकँ दरबज्जापर सँ हँसा कऽ विदा केलनि। यएह विचार हमरो मोनमे आएल।

जुही : ई विचार बाबामे किएक ने एलनि?

कर्मनाथ : ई तँ ओ जानथि। मुदा हमरा मोनमे जरूर भेल जे जहिना तोहर नन्ना कनैत एला तहिना हम हँसा कऽ विदा करबनि। चाहे परिवारमे जे होइ। फेर मोनमे आएल जे जाधरि परिवारसँ नीच विचार हटत नै ताधरि उच्च विचार आबि केना सकैए। ई तँ कोनो जादू-टोना नै छिऐ। बेवहार छिऐ। जे सोझे काज-करमसँ जोड़ल अछि।

फुलेसर : तेकर बाद की केलिऐ?

कर्मनाथ : (गंभीर होइत) थोड़े काल मोने-मन विचार केलौं जे अखनि तँ हमरो स्थिति काटल गाछक छाहरिए जकाँ अछि। तँए बिआह करैसँ पहिने अपन आस्तित्व काएम करी। अगर जँ से नै कऽ पहिने बिआहे कऽ लेब आ कनियाँ घर लऽ आनब तँ ओहने दशा कनियाँ संग हेतनि जहिना अनभुआर चिड़ैक दशा चिड़ैक जेरमे होइत। तँए जरूरी अछि जे पहिने अपन जिनगीकेँ अपना हाथमे लऽ कऽ चली। मुदा ई हएत केना? सोचैत-विचारैत तँइ केलौं जे आब ऐ घरकँ छोड़ि केतौ नोकरी करी। नोकरी करैक विचार मोनमे अबिते हम कहलियनि जे ऐठाम अपनेक जे नोर खसल ओ अपनेक उद्धार करत।

जुही : (हँसैत) तब तँ नानाक मन खूब खुशी भेल हेतनि?

कर्मनाथ : ओ बड़ पारखी रहथि। किछु बाजथि नै मुदा हमरे मुँहक बात सुनए चाहथि। जबकि हमरा मोनमे भीतरसँ समुद्रक लहरि जकाँ उठए। हुअए जे की कहियनि, केते कहियनि जे ओ ठहाका मारि हँसथि। हम कहलियनि जे अपने भोजन क-ए लेल जाउ। ओ कहलनि, बौआ अहाँ अखनि बच्चा छी तँए अपना ऐठामक विधि-बेवहार नै बुझै छिऐ। अखनि हम कन्यागत छी, केना भोजन करब। मनमे भेल जे कहि दियनि जे, जौर जरि गेल मुदा अँइठन नै गेल। हम भुखल बूझि कऽ कहलियनि आ ओ शास्त्र पढ़बए लगलथि। मुदा हम चुप्पे रहलौं। फेर कहलियनि जे कम-सँ-कम एक गिलास पानि पीब लेल जाउ। पानिक नाओं सुनि धड़फड़ा कऽ कहलनि, हँ, ई भऽ सकैए।

जुही : चाह-ताह पीबैले नै कहलियनि?

कर्मनाथ : अपना ऐठाम (इलाका) तँ चाहक चलनि (1935 ई.क पछाति भेल) आब भेलहँ। जखनि पानि पीबैले राजी भऽ गेला, तखनि सोचलौं जे भरि मन शर्बत पीआ देबनि। मुदा बाउ, अपना ऐठाम गिलासमे पानि बच्चा पीबै छल चेतन लोटामे पीबै छल। एकटा बड़का लोटा अपना घरमे अछि, जइमे तीन किलोसँ बेसीए पानि अँटैए। ओहीमे भरि लोटा शर्बत बना कऽ अनलौं आ आगूमे रखि देलियनि। लोटा देखि ओ हँसि देलनि।

जुही : शर्बत देखि कऽ हँसलथि आकि मोने खुशी भऽ गेल रहनि?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानथि। मुदा तखनिसँ हँसी मेटेलनि नै। लोटो भरि शर्बत पीब लेलनि। शर्बत पीब, बटुआ खोलि पान निकालि मस्तगर खिल्ली लगा, मुँहमे लैत कहलनि जे आब मन हल्लुक भऽ गेल। जेते हुनकर मन हल्लुक होइत जाइन तेते हमरो मोनमे शान्ति अबैत गेल। मुदा करेज सक्कत हुअ लगल। हम कहलियनि, किछु दिन अपनेकेँ प्रतीक्षा करए पड़त। मुदा एते अखनि जरूर कहि दइ छी जे जइ काज लेल अपने परेशान छी ओ परेशानी जरूर मेटा जाएत। एते सुनिते ओ बाजए लगलथि जे हम सभ मिथिलाक बासी छी तँए मैथिल छी। हमरा सबहक पूर्वज नारीक जीबठकेँ जनै छेलखिन। किएक तँ जिनगी-जिनगी भरि नारी परपुरुषक मुँह नै देखलनि, भलहिं ओ बाल-विधवे किएक ने भऽ गेल होथि। जे हमर धरोहर सम्पति छी। हँ, आइ भलहिं समाजक विकृतताक चलैत किछु अनुचित जकाँ जरूर भऽ गेल अछि। मुदा अस्सल तथ्य सभकेँ बूझक चाही। हम दुनू गोटे गप-सप्प करिते रही कि ओम्हर-कोठरीमे पिताजी गरजि कऽ अन्ट-सन्ट बाजए लगलथि।

फुलेसर : अढ़ेसँ बाबा बजथि, सोझहामे किए ने एला?

कर्मनाथ : से तँ ओ जानथि। ओ माने तोहर नाना उठि कऽ विदा हुअ लगला कि हम गोड़ लगलियनि। गोड़ लगिते ओ बटुआ खोलि पाँचटा रूपैआ हमरा हाथमे दैत कहलनि, बाउ मिथिला अखनो पुरुष-विहिन नै भेल अछि, आ ने हएत। आब अहीं सबहक (नव युवक) हाथमे सभ किछु अछि, तँए, जेना कऽ आगू लऽ चली। कहि चलि गेला।

फुलेसर : अहाँ की केलिऐ?

कर्मनाथ : बी.ए. धरि हम कहियो, कोनो क्लासमे फेल नै केने छेलौं, तँए मोनमे पढ़ैक उत्साह एक्कोपाइ कमल नै छल। सोचलौं जे जखनि नोकरी करबाक अछि तखनि एकबेर प्रशासनिक परीक्षामे बैस कऽ देखिऐ। नै पास करब तँ नै करब। दू बरख मेहनत कऽ परीक्षामे बैसलौं। पास केलौं। पास केला पछाति बिआह केलौं। आब पैछला खिस्सा-पिहानी छोड़ह। अखनि परिवारक सभ कियो छी, तँए एकटा विचार कइए ली।

फुलेसर : (साकांच होइत) हम सभ तँ बच्चा छी, की विचार दऽ सकै छी। मुदा बूझि तँ सकै छी।

कर्मनाथ : बौआ, कोनो परिवारक बच्चा ने एक्केबेर सियान होइए आ ने एक्के रंग रहैए। किएक तँ सभ परिवारक वातावरण एक्के रंग नै होइ छै। पढ़ल-लिखल परिवारक बच्चा आ बिनु पढ़ल-लिखल परिवारक बच्चामे बहुत अंतर होइ छै। तहिना अगुआएल परिवारक (सम्पन्न) बच्चा आ पछुआएल परिवारक (गरीब) बच्चामे सेहो बहुत अंतर होइए। एहेन-एहेन अनेको कारण अछि जइसँ दू परिवारक बच्चाकेँ दू रंगक वातावरण भेटै छै। तँए दू रंगक होइए।

चमेली : जेकर माए-बाप खुट्टा सन-सन ठाढ़ रहत, अनेरे ओइ बच्चाकेँ परिवारक काज किए पुछबै?

कर्मनाथ : बिनु बुझने अहाँ किए सभ बातमे टाङ अड़ा दइ छिऐ। (भाव बदलैत) ओना अहूँक दोख बड़ बेसी नहियेँ अछि किएक तँ अहुँक विचार एक रस्तेक अछि। जे रास्ता बेवस्थासँ जुड़ल अछि। ऐ दुनियाँक अजीव बुनाबटि अछि। कनी नीक जकाँति बुझिऔ। जहिना विषुअत रेखा, बीच दुनियाँमे अछि। रेखासँ उतरो आ दछिनो, समान दूरीपर, एक्के रंग मौसम होइए। मुदा विपरीत समैमे। तहिना विचारो आ जिनगीओक अछि। अखनि चम्पाक बिआहक सम्बन्धमे विचारबाक अछि तँए बेसी नै कहब। कोनो परिवार, परिवारक सभ सदस्यक होइत, नै कि परिवारक गार्जनेटाकेँ। हँ, ई बात जरूर अछि जे परिवारक सभ काजक भार गार्जनेपर रहैए एकर माने ई नै जे बच्चा सभ बुझबे ने करए।

फुलेसर : बहिनक बिआहक चरचा करै छेलिऐ?

कर्मनाथ : जे बात बौआ तूँ पुछलअ, सएह हमहूँ कहए चाहै छिअह। तीनू भाए-बहिनमे चम्पा जेठ छह। बी.ए.क रिजल्टो निकलिये गेलै। अपना मोनमे जे छल ओ भइए गेल। उमेरोक हिसासँ अठारहम पूरि उनैसम चढ़ल, तँए आब बिआह कऽ लेब उचितो हएत। कथा-कुटुमैतीक सवाल अछि, तँए किछु समए लगबे करत।

फुलेसर : किछु दिन पछाति चलितौं

कर्मनाथ : देखहक, ओना तँ हमहूँ नीक-नाहाँति नहियेँ बुझै छी किए तँ सभ दिन बाहरे रहलौं। मुदा देखै छिऐ जे किछु मास छोड़ि लोक बेटा-बेटीक बिआह सभ मास करैए। तखनि तँ सभ मासक अपन-अपन गुण छै। तइमे हमरा बुझैत फागुनक काज बढ़ियाँ होइए। जाड़क मासमे बेसी जाड़ आ गरमी मासमे हवा-बिहाड़ि संग रौउदो तीख होइ छै। तँए फागुनक दिन सभसँ नीक।

(चम्पाक बिआहक चर्च सुनि सबहक मोनमे सभ रंगक विचार उपकै लगल। चमेलीक मोनमे बेटी जमाए आ परिवार नाचैए लगल। जबकि चम्पाक मोनमे बदलैत जिनगी। जुहीक मोनमे बहिनक बिआहक आनन्द तँ फुलेसरक मोनमे माए-बापक परेशानी। खुशीसँ जुही गीत गाबए लगली।)

चमेली : बेटी बिआहक चर्च, बेटीक सोझहामे करैत लाज-धाक नै होइए?

कर्मनाथ : से की?

चमेली : आइ धरि एहेन केतौ देखने-सुनने छेलिऐ। आकि मोनमे सनकी सवार भऽ गेल अछि। जे मोनमे अबैए बकै छी?

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) जेकरा अहाँ नीक परम्परा बुझै छिऐ, भऽ सकैए, जखनि समाजमे दहेज (खरीद-बिक्रीक) चलनि नै रहल हेतै। पढ़लो-लिखल नहियेँ जकाँ छेलै। मुदा आइक बेटी पढ़लक-लिखलकहेँ। ओ अपन जिनगीक बात बुझए लगलहेँ। तँए माए-बापक ओकाइत आ अपना प्रति माए-बापक सेवा ओकरा सोझहामे अछि। तँए ओ खुद -अपन बिआहक विचार- कऽ सकैए। एहेन तँ नै जे बेटीक चलैत माए-बाप डुमि जाए वा माइए-बाप बेटीकेँ डुबा दइ। जहाँ धरि अनमेल बिआहक बात अछि ओ लेन-देनक चलैत रहल अछि। तँए बेटीकेँ अपनापर भरोस कऽ अगिला जिनगी लेल डेग बढ़बए पड़तै। जइ समाजमे नारी शिक्षाकेँ

अधला मानल गेल ओइ समाजमे लड़का-लड़की समान केना भऽ सकैए। तखनि रहल रंग-रूपक समानता, रंग-रूपक समानता परिवारक रंगरूप समाप्त कऽ दइए। तहूसँ जुआएल गहुमन बिनु केंचुआ छोड़ने कातमे बैसल अछि। ओ छी जातिक भीतर जातिक कूल-मूल।

फुलेसर : बाप रे बाप, जइ समाजमे एते रंगक विषमता अछि ओ समाज एक रास्तासँ चलि केना सकैए। समाजक बात तँ कात रहऽ जे परिवारो केना चलि सकैए। मर्द-औरत माने पति-पत्नी परिवारक मुख्य अंग होइत, जहिना गाड़ी-पहिया। मुदा गाड़ीक एक पहिया मजगूत होइ आ दोसर कमजोर तँ समुचित भार लऽ गाड़ी केना चलि सकत। तहिना तँ परिवारो अछि।

कर्मनाथ : बौआ, समाज आ परिवार ऐ रूपे, पुरान कपड़ा जकाँ, चिड़ी-चोंत भऽ कऽ फाटि गेल अछि जेकरा सीला सँ काज नै चलि सकैए। जाधरि ओइमे पीओन-चेफड़ी लगा-लगा काज चलौल जाइए, जाइए। मुदा ऐसँ काज केते दिन चलत। अखनि हम ऐसँ बेसी नै कहबह। किएक तँ अखनि अपने सिरपर काज अछि जइले सोचबाक अछि।

चमेली : जखनि चम्पाक बिआहक विचार करै छी तँ गहना जेबरक ओरियान कहिया करब?

कर्मनाथ : (चम्पा दिस देखि) कहलौं तँ ठीके, मुदा जेकरा रूपैआ नै रहतै ओ की करत?

चमेली : छूछ देहे बेटी सासुर जाएत, से अपना नीक लागत?

कर्मनाथ : कहलौं तँ ठीके, मुदा जेकरा अहाँ मान-मरजादा बुझै छिऐ ओ खाली गहने-जेबर छी। गरीब लोक जे गहना-जेबरक सिहिन्ता करैए ओ ओकर मुरुखपना छिऐ। कनी आँखि उठा कऽ देखियौ जे कोन परिवारक माए-बाप अपना बेटीकेँ किछु-ने-किछु गहना नै देलक, मुदा केकरा घरमे एकटा कनौसीओ छै। तँए गरीब लोककेँ एकर (गहनाक) सिहनते नै करैक चाही।

फुलेसर : बाबूजी, जखनि एहेन ओझरौठ काज अछि आ अखनि धरि किछु केलौं नै, तखनि लगले केना काज निपटाएब?

कर्मनाथ : हम संकल्प कऽ कऽ गाम जा रहल छी, तँए बिआह हेबे करतै। काज केना हएत से हमरा मोनमे अछि। हम्मरबेटी जुगक अनुकूल अछि, तँए

बिआह नै होइक कोनो कारणे ने अछि। (चम्पा से) बाउ, तूँ हमर जेठ बेटी छिअह। पढ़ल-लिखल सेहो छह। तँए तोरा किछु बात कहि दिअ चाहै छिअह। दुनियाँ दिस नै देखह अपना आ अपन माए-बापकेँ देखह। हम पढ़ि कऽ प्रशासनिक अफसर बनलौं मुदा तोहर माए केते पढ़ल छथुन। फेर परिवार केना चलैए। तोरा हम बी.ए. पास करा देलियऽ। तोरामे ओते क्षमता आबि गेल छह जे स्कूल, ऑफिस, बैंक वा आन कोनो काज कऽ सकै छह, तखनि तोहर जिनगी भारी किए हेतह। मनसँ ई हटा लैह जे हम उपार्जन नै कऽ सकै छी। जहिना पुरुख उपारजन करैए तहिना तहूँ कऽ सकै छह। हम तोहर बाप छिअह, तोहर अधला हुअ ई हमरा मोनमे केना औत?

चमेली : गाममे जे खेत-पथार अछि, जइसँ एक्को सेरक आशा कहियो ने होइए, भाय सभ बेचि-बेचि खाइए, ओ बेचि कऽ बेटीक बिआह कऽ लिअ।

कर्मनाथ : कहलौं तँ ठीके मुदा जाधरि पिताजी जीबै छथि ताधरि हम्मर बेचब उचित हएत। एक तँ ओहिना पिताजी हमरापर बिआहेसँ कड़ुआएल छथि, तैपरसँ जौं एहेन काज करब तँ परिवारमे विस्फोट होइमे बाँकी रहत। हम बेटीक बिआह करैले गाम जाएब कि घरमे आगि लगबै लेल।

फुलेसर : (चिन्तित भऽ) बड़ भारी काज उपस्थिति भऽ गेल अछि, बाबूजी।

कर्मनाथ : (मुस्कीआइत) बौआ, अखनि तूँ बच्चा छह; तँए नीक जकाँति परिवार आ समाजकेँ नै जनै छहक। जहिना फुलवारीमे सैकड़ो रंगक फूल रहै छै, मुदा कातसँ देखिनिहार तँ कातेक फूल देखैए। बीचमे कोन फूल केहेन छै, से थोड़े देखैए।

फूलेसर : अहाँक बात हम नै बूझि सकलौं, बाबूजी।

कर्मनाथ : फुलवारीक तँ उदाहरण देलियऽ। असल बात समाजक अछि। फुलबारीए जकाँ समाजोमे अछि। हजारो रंगक मनुख समाजमे रहैए। हर मनुखकेँ अपन-अपन जिनगी, अपन-अपन विचार होइ छै। जइसँ अपन-अपन संकल्प आ उदेस (उद्देश्य) सेहो होइ छै। नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला मनुख समाजक पेटमे नुकाएल रहैए। जेकरा मात्र देखिनिहारे देखि पबैए। सभ नै। मुदा एकटा बात कहि दइ छिअह जे जखनि कोनो काज करैले डेग उठाबी तँ देहक सभ अंगकेँ चौकन्ना

कऽ कऽ राखी। जेकर सभ अंग क्रियाशील रहत ओ माटिक रास्ताक कोन बात जे पानियोँ आ हवोक रास्तासँ चलि सकैए। तँए हरिदम आशावान भऽ कऽ डेग बढ़ेबाक चाही।

दोसर अंक

(सोमनाथक दरबज्जा। सोमनाथ मसलनपर ओंगठल,
आशा आ नूनू दुनू भाग बैसल।

सोमनाथ : बाउ नूनू, आइ जे भाँग पिऔने छेलह से केतएसँ अनने छेलहक? अपन घरक पत्ती तँ नै छेलह। बहुत दिन बाद एहेन मस्तगर भाँग पीलौं। आब कनी चाह पीआबह। तखनि, परसू जे कर्मनाथक पत्र आएल छेलह, ओ पढ़ि कऽ सुना दिहऽ।

(नूनू चाह आनए जाइए)

(पत्नीसँ) एकटा बात कहौं?

आशा : की?

सोमनाथ : कनी बिआह दिनक बात मन पाड़ियौ तँ। ओइ दिन ई बात कल्पनो केने रही जे एक दिन हमहूँ सभ अथबल हएब?

आशा : (खौंझा कऽ) मन बौआइए। जेते बूढ़ भेल जाइ छी तेते बुधिओ टूटि-टूटि खसैए। एतबो ने बुझै छिऐ जे ऐ दुनियाँक निअमे छै जे जनम लेब, जुआन हएब आ बूढ़ भऽ कऽ मरि जाएब। अगर जँ से नै होइत आ पहिलुको लोक सभ जीविते रहितथि तँ अहाँकेँ आकि हमरा के पुछतए?

(चाह लऽ कऽ नूनू अबैए। एकटा कप सोमनाथक हाथमे आ एकटा आशाक हाथमे दैत)

सोमनाथ : (चाहक चिस्की लैत) सात घर मुद्दैओ किए ने हुअए मुदा भगवान जँ ओकरो बेटा देथुन तँ नूनू सन देथुन। जे बेटा बाप-माएक सेवा नै केलक ओहो कोनो बेटे छी। कखनो काल मोनमे अबैए जे दूटा समाजो-लोककेँ आ अपनो दियादबादकेँ बैसा कहि दिऐ जे हमरा मुइलापर नूनूए आगि दिअए।

आशा : एना किए बजै छी। लोक सुनत तँ की कहत। जखनि भगवान तीनटा बेटा देने छथि तँ हमरा लिए सभ बरबरि। जेकरा हाथे आगि लिखल

हएत, ओ देत। कोनो कि देखैले एबै। माए-बापक अपन करतब छै, बेटा-बेटीक अपन होइ छै। तइले अनेरे माथ किए धुनै छी।

सोमनाथ : (बिगड़ि कऽ) जे बेटा जीबैतमे कटहर लगा कऽ मोजर नै दइए ओ मुइलापर सोनाक मंदिर बना देत। अहाँ सएह बुझै छिऐ।

आशा : (झपटैत) जेना अहाँ अपना माए-बाबूकेँ सोनाक मंदिर बना देने होइयनि, तहिना बजै छी। जेहने किरिया-करम कऽ कऽ मरब तेहने ने फलो हएत। जँ अशुद्ध (अधला) किरिया कऽ कऽ मरब तँ भूत-प्रेत बनि गाछी-बिरछीमे बौआएब, नै जे शुद्ध (नीक) किरिया कऽ कऽ मरब तँ स्वर्गमे जाएब। देखै नै छिऐ जे पपिआहा सभ जे मरैए तँ ओहिना बौआइत रहैए। पियास लगै छै तँ इनारपर जा-जा लोकक धैला फोड़ैए आ भुख लगै छै तँ बाट-बटोहीकेँ पटैक-पटैक सनेस छीनि-छीनि खाइए। हमरा आकि अहाँकेँ विधाता छठियारे राति जे लिखि देने छथि, से तँ हेबे करत।

सोमनाथ : (पिनकि कऽ) ठीके मौगी बातक कोनो ठीक नै। लगले कहै छी जे जेहेन किरिया करब तेहेन फल हएत आ लगले कहै छी जे छठियारे राति विधाता लिखि देलनि। अच्छा, एकटा बात कहू तँ, जाबे जीबै छी ताबैए ने लिखलाहा हएत आकि मुइला पछाइतौ।

आशा : अहाँकेँ की होइए जे मुइला पछाति फेरसँ लिखाएत। आकि छठियारे रातिक लिखल मुइला पछाइतो हएत।

(पनबट्टीसँ पान निकालि मुँह लैत सोमनाथ)

सोमनाथ : (मुँहक पान गाल तर दबैत) बेटा नूनू, अगर जँ भगवान गाहीक-गाही बेटा नहियोँ दथि आ तोरा सन एकोटा रहए तँ ओइ गाहीक-गाहीसँ नीक। अपना सबहक जे बाप-दादा कहने छथिन जे माए-बापक सेवा करब बेटाक सभसँ पैध धरम छी। से कोनो अधला कहने छथिन। अखनो जे ई दुनियाँ चलैए से तोरे सन-सन बेटाक धरमपर। नै तँ ई दुनियाँ कहिया ने अलोपित भऽ गेल रहैत। किएक तँ तेते ने चोर-उचक्का, बेइमान-शैतान सभ फड़ि गेल अछि जे एक्को दिन ई धरती असथिर रहत। अच्छा, एकटा बात कहऽ जे औझुका भाँग केतएसँ अनने छेलह।

नूनू : औझुका कोन भाँग छेलए से नै बुझलिऐ। दछिनबारि टोलमे जे दिनेश अछि वएह दरभंगासँ अनने अछि।

सोमनाथ : के दिनेश?

नूनू : हीरा कक्काक बेटा। दरभंगा कौलेजमे पढ़ैए।

सोमनाथ : (किछु मन पाड़ैत) हीरालाल। ओकरा तँ कहियो भाँग मुँहमे लैत नै देखलिऐ। तेकर बेटा एहेन ओसताज भऽ गेल।

नूनू : एँह, जेहने मजगर भाँग पीबैए तेहने टिपगर तमाकुलो खाइए। गाममे ओहन माल के देखत। अपना सभ तँ ओ भाँग पीबै छी जे बाड़ी-झाड़ीमे अनेरूआ जनमैए मुदा ओ शुद्ध कलमी भाँग पीबैए।

सोमनाथ : भाँगो कलमी होइ छै, हौ।

नूनू : अहाँ तँ पुरना गीत गबै छी। विज्ञान केते आगू बढ़ि गेल अछि से नै बुझै छिऐ। आकि सोझे हवाइए जहाज आ रौकेटेटा बुझै छिऐ। विज्ञान बढ़लासँ खैओ-पीबैक वस्तु बढ़ल की। अहाँ ने हरिदम कहै छिऐ जे बासमती धानक चूड़ाक जोड़ा दोसर नै अछि। मुदा आब जे चूड़ा बजारमे बिकाइए ओकर जोड़ा बासमतीक चूड़ा करतै।

सोमनाथ : चूड़ाक गप छोड़ह। देखते छहक जे छह माससँ तेहेन रोग ने तरे-तर देहमे घोंसिया गेल अछि जे सभ खेलहा-पीलहा बिसरि गेलौं। जे ने करै बिमारी। नै तँ जइ जअकँ कहियो अन्नमे नै गनलौं, से भऽ गेल अछि अहार। थाकल पाँउ पलंग भेल भारी, आब की लादब हौ वेपारी। खाइक बात छोड़ह। कलमी भाँग केना होइ छै, से कनी बुझा दैह।

नूनू : एकटा बड़ भारी कम्पनी अछि। जेकर अरबो-खरबोक कारोबार छै। वएह भाँगोक कारोबार करैए। भाँगेक जूस, मोदक इत्यादि विन्यास बना-बना देश-विदेश सगतरि बेचैए। वएह कम्पनी भाँगक खेती करैले किसानकेँ अगुरबारे खरचो आ शंकर किस्मक बीओ दइ छै। किसानो सभकेँ आन फसिलसँ बेसी रूपैओ होइ छै आ मेहनैतो कम होइ छै। बाधक-बाध किसान सभ काते-कात मकइ रोपने अछि आ बीचमे बीधाक-बीघे भाँग लगौने अछि। ओही भाँगमे मसल्ला सभ मिला कऽ जूसो, मोदको आ आनो-आनो विन्यास सभ बनबैए।

सोमनाथ : अच्छा, आब दुनियाँदारीक बात छोड़ह, पत्र निकालि कऽ सुनाबअ।

(जेबीसँ चिट्ठी निकालि नूनू मोने-मन पढ़ए लगैत)

नूनू : (चिट्ठी पढ़ि) सबतूर भैया नीके छथि। चम्पा बी.ए.पास केलक। ओकरे बिआह लेल लड़का भँजियाबए लिखलनि हें।

सोमनाथ : (उत्तेजित होइत) तोरा दुनू भाँइकेँ लिखने छौ कि हमरा।

नूनू : अहींकेँ लिखने छथि।

सोमनाथ : (आरो उत्तेजित होइत) पढ़ल-लिखल लोक केते बेसरमी होइए से देखही। तोरा मन हेतौ आकि नै, जखनि उ बी.ए. पास केने रहए, तखनि बिआहक चरचा उठौलिऐ। (अपशोच करैत) ओ-हो-हो, हूसि गेल। गरदनि कटि गेल। सम्पति दोबर भऽ जैतौ। बीस बीघा खेत तँ बेटीक खोंइछमे दइले तैयार रहए। नगद आ जेबरक कोन ठेकान। (आदर्शवादी बनैत) कहू जे केते भारी नोकसान परिवारमे भेल?

आशा : अहाँ तँ तेना बताह जकाँ बजै छी जेना करमू ऐ घरक कियो छिहे नै। ने अहाँ कियो छिऐ आ ने ओ कियो छी। बाल-बच्चा जे कनी-मनी किछु कइए गेल तँ की हेतै। तइले अहाँ किए एते आमील पीने छी।

सोमनाथ : हूँह। एते दिन बेटा सिखौलक आ आब अहाँ सिखाउ। गीदरक नांगरि केम्हर होइ छै से अहीं बुझबै। दिन-राति कमाइ छी, घर चलबै छी तँए बूझि पड़ैए जे अहिना दिन-दुनियाँ चलै छै। (चिन्तित होइत) आब तँ सहजे अथबले भेलौं, अपनो जिनगी पहाड़ बूझि पड़ैए। मान-अपमान, इज्जत-आबरु सभ बिसरि गेलौं। जाबे जीबै छी ताबे कौआ जकाँ टाँहि-टाँहि करै छी। (अपशोच करैत) घरक की मान-प्रतिष्ठा छल, की रूआब छल, सभटा चलि गेल। भगवानो रच्छ रखलनि जे सभ सुख-भोग छोड़ा देलनि। जअकेँ फाँटीपर आनि कऽ रखि देलनि। नै तँ हम्मर की दशा होइत से तँ उगलेहे देखितथि। (गंभीर होइत) अच्छा अहीं कहू जे बेटा मनसम्फे कमाइए कि नै? मुदा माए-बापकेँ की दइए?

आशा : (मुँह बिजकबैत) अहाँकेँ कोनो गत्तर मे लाजे ने होइए। जखनि करमू नोकरी शुरू केलक आ महिने-महिने पान सए रूपैआ पठबए लगल, तँ तीनिए मास पछाति लिखि पठौलिऐ जे पान सए रूपैआ लऽ कऽ चुट्टी बिल गहब। आ आब निरलज भट्टा जकाँ कहै छिऐ जे रूपैए ने दइए। अगर पान सए रूपैआ झुझुआन बूझि पड़ल तँ कहितिऐ जे बौआ मासे-मास नै, छह मासपर एक्के ठीन पठबिहऽ। जइसँ कोनो काज चलत।

सोमनाथ : बड़ बुधियारि छी अहाँ। एकटा बात कहू तँ, बेटा-बेटीक बिआह-दुरागमन करब माए-बापक मर्यादा छी कि नै? आकि अपने मोने बिआह कऽ लिअए।

आशा : अगर जँ करमू (कर्मनाथ) अपने मोने बिआह कइए लेलक तँ कोन बड़ भारी जुलुम कऽ लेलक। कोनो कि जाति गमा लेलक? दहेज नै लेलक, सएह ने केलक। तँ की हेतै। वएह कन्यागत अहाँक तिजोड़ी भरि दैतए तँ बड़ बढ़ियाँ, नै भरलक तँ बड़ अधला।

सोमनाथ : की हौ बौआ नूनू। माएक बातकेँ तूँ नीक बुझै छहक कि अधला।

नूनू : बाबू, माए पुरना विचारक लोक छथि तँए हिनको विचार बेजाए नहियेँ छन्हि। मुदा आब तँ जुग बदैल चुकल अछि। अर्थजुग आबि गेल। जेकरे पाइ छै ओकरे लोक मनुक्खो बुझै छै आ समाजमे मानो-प्रतिष्ठा दइ छै। तँए एते घाटा तँ परिवारमे जरूर भेल जे मोट रकम हाथसँ ससरि गेल। मुदा माए, आब परीक्षो बेर आबिए गेल अछि। करमू भैया दहेज नै लेलनि, बड़बढ़ियाँ। मुदा आब तँ अपनो बेटीक बिआह करबाके छन्हि किने?

सोमनाथ : (फरैक कऽ) हँ-हँ, बेस कहलहक बौआ। जनिहेँ मियाँ धुनै बेरिया। भने तँ आबिए रहल अछि। भगवान नीक केलनि जे अथबल बना देलनि। ने किछु करब आ ने दोखी हएब।

आशा : बौआ नूनू, तूँ ने कहै छहक जे अर्थजुग आबि गेल, तँए सभ काज पाइएक हाथे हएत। मुदा एकटा बात बुझै छहक, मनुख मनुक्खे रहत। जुग कोनो अबै आकि जाइ मुदा नीक काज करैबला नीके काज करत आ अधला काज करैबला अधले करत। जइ बेटाक दोख तूँ दुनू बापूत लगबै छहक ओइ बेटाक गुणो बुझै छहक। अपन परिवारक कोन बात जे गामेमे अपन कर्मनाथक जोड़ा कएटा अछि। मनुख तँ सौंसे गामे भरल अछि।

सोमनाथ : अहाँ हाकिम बेटा लऽ कऽ नाचू मुदा हम तँ सोमनाथे छेलौं आ रहबो करब। हमरा नूनू सन बेटा रहक चाही। जखनि जे कहै छिऐ, दासो-दास रहैए।

आशा : अहीं सन हमहूँ नै ने छी जे कर्मनाथ सन बेटापर ओंगरी उठाएब। अपनो तँ दूटा बेटी आ (कर्मनाथ छोड़ि) दूटा बेटो अछिए, किए ने

एकोटा हाइओ स्कूल धरि देखलक। बेटेक चलैत पोती बी.ए. पास केलक। तेकरा अहाँ मनुखे ने बुझै छिऐ। जेकरा अहाँ नै मनुख बुझबै ओ अहाँकेँ मनुख बूझत?

सोमनाथ : (शान्त होइत) आब हमरा कोन मनुख बनैक काज अछि। मृत्युक रास्तामे अँटकल छी जखनि रसीद कटि जाएत, राम-राम कऽ कऽ विदा भऽ जाएब।

(लालबाबूक आगमन)

सोमनाथ : भरि दिन तूँ केतए निपत्ता रहै छह लालबाबू?

लालबाबू : एँह, की कहब बाबू! केकर मुँह देखि कऽ आइ उठलौं जे समैपर अनजलो ने भेल। सबेरे चौक दिस गेलौं तँ देखलिऐ जे मारे-लोक घोल-फचक्का कऽ रहल अछि। अनगौंओ आ गौंओ थाहा-थही कऽ रहल अछि। ससरि कऽ हमहूँ गेलौं, तँ देखलिऐ जे अनगौआँ सभ शन-शन कऽ रहल अछि। गौआँ सभ मुड़ियारी दऽ दऽ खाली सुनैए। मन असथिर भेल। एक गोटेकेँ पुछलिऐ जे भाइ की बात छिऐ जे अहाँ सभ एना शन-शन करै छी? केतए हँड़ बान्हि कऽ जा रहल छी, ओ कहलक, हमरा गामक (खरबोनीक) एकटा विद्यार्थी दरभंगामे पढ़ैए। लौजमे रहैए। ओही लौजमे पिपराघाटक सेहो पान-सात गोटे रहैए। एकठाम रहने सभकेँ-सभसँ चिन्हारे छै। पिपराघाटक विद्यार्थी सभ हमरा गामक विद्यार्थीकेँ फुसला कऽ अपना गाम लऽ गेल आ एकटा लड़की संग बलजोरी बिआह करा देलक।

सोमनाथ : लड़का बापकेँ बिना पुछिनहि?

लालबाबू : हँ, तँए ने लड़काक समांग सभ जुटि कऽ पिपराघाट जाइए। लड़काक पितियौत भाइ कहलक जे दस लाख रूपैआपर लड़काक बिआह सतगछिया ठीक भेल छै। जइमे एक लाख रूपैआ अगुरवारे देनौं छै। बाँकी रूपैआ बिआहसँ चारि दिन पहिने देबक बात पक्का भऽ गेल छै।

सोमनाथ : जखनि लड़का-लड़कीक बिआह भऽ गेलै, तखनि लड़काबला सभ जा कऽ की करतै?

लालबाबू : एँह, की करतै? तेहेन गरमाएल लोक सभकेँ देखलिऐ जे बूझि पड़ल जेना बेटीबलाकेँ घरक कोरो खींचि लेतै। आ अहाँ कहै छिऐ की करतै।

सोमनाथ : केते गोरे खरबोनीबला सभ छेलै?

लालबाबू : कोनो की गनलिऐ मुदा चालीस-पचासक धत-पत छेलै।

नूनू : आइए खरबोनीबला सबहक दालक छुटतै। तेहेन शैतानक चरखी पिपराधाटबला सभ अछि जे आइए बूझि पड़तै। तहुमे एकटा तेहेन खूँखाड़ नेताक धसना पाटी अछि जे काजे यएह करैए।

सोमनाथ : (दुनू हाथ माथपर लऽ) कोन जुग-जमाना चलि आएल से नै जाइन।

नूनू : बाबू, भगवानकेँ कहियनु जे दस बरख आरो औरदा दथि। तखनि देखबै जे की सभ होइ छै।

सोमनाथ : तेकर बाद की भेलै?

लालबाबू : सभ कियो चाह-पान खा उत्तर मुहेँ सनकल विदा भेल। चौकसँ जखनि ओ सभ कनी आगू बढ़ल आकि हमहूँ ससरि कऽ रतनाक चाहक दोकानपर आबि गेलौं। चाहक देकानपर नीक-नहाँति बैसलो ने रही कि सुरजा आएल। तामसे ओकर मुँह तुरुछ जकाँ भेल मुदा किछु बजै नै। पुछलिऐ जे सुरुज मन बड़ खिसिआएल छह। ओ कहलक, लालबाबू की कहब! दुनियाँमे सभ बेइमान भऽ गेल। केकरा के अपन बूझत। पुछलिऐ से की? कहलक हमरा सारकेँ बेटीक बिआहमे करजा भऽ गेलै। ने रूपैआ होइ छेलै आ ने महाजनकेँ दइ छेलै। खिसिआ कऽ महाजन लालीस कऽ देलकै। हमर सारो चलाकी केलक। ओ अपन सभ जमीन ममियौत भायक नामसँ फरजी कऽ देलक। ओहो साला तेहेन नेतघट्ठू जे सभ जमीन बेइमानी कऽ दफानि लेलक। सएह, ओतैसँ समाद आएल हेँ जे कनी आबि कऽ फड़िया दिअ।

नूनू : के केकरापर बिसवास करत। एक तँ ओ वेचारा अपन बूझि जमीन फरजी केलक आ ओ साला केहेन गैखौक भऽ गेल जे सभटा बेइमानी करै छै।

लालबाबू : अखनि तँ अनकर बात सुनलिऐ। आब अपन बात सुनू; चाह पीब कऽ जहाँ घर दिस विदा भेलौं कि आगूऐसँ गंगाइ घेरि कऽ कहए लगल।

सोमनाथ : (उत्सुक भऽ) की, की गंगाइ कहए लगलह?

लालबाबू : कहए लगल जे अहाँक मोहन (लालभाइ) हमर गरदनि काटि लेलनि। गरदनि कटैक नाम सुनि हम चौंकलौं। मोनमे रंग-बिरंगक बात आबए लगल। पुछलिऐ जे कनी सेरिया कऽ कहऽ। ओ कनैत कहए लगल

जे पनरह कट्ठा खेत हुनकासँ नेने छेलौं। दस हजार रूपैए कट्ठा देने रहथि। जेकरा तीन-चारि मास भेल हएत। खेत जोइत कऽ मकइ केने छी। परसू खन मुनेसरा आबि कऽ कहलक जे गंगा भाइ मकइ हमरा बाँटि दिहऽ। हम चौंकि गेलौं कहलिऐ जे जखनि हम खेत किनने छी तँ तोरा किए बाँटि दिअ। एते सुनिते ओ जेबीसँ दस्ताबेज निकालि कऽ देखा देलक। ओकर रजिष्ट्री हमरासँ दू मास पहिलुके छै।

सोमनाथ : (अकचकाइत) मोहनक तँ चालि-प्रकृति एहेन नै छै।

नूनू : लोकक किरदानी मुँह-कान देखने बुझबै। बेटीक बिआह जे ओते लाम-झामसँ केने छला से केतएसँ। एक लाख रूपैआमे पटना से खाली टेन्टे अनने छला। कहाँदन पच्चीस हजार भनसिआ नेने छेलै, तैपरसँ चारि सए बरियातीक खेनाइ-पिनाइ। तहूमे जेते बरियाती खेलक तइसँ बेसी समान उगरिए गेलनि।

लालबाबू : सात लाख रूपैओ गनने छला।

सोमनाथ : जे सात लाख रूपैआ गनत ओ ओहने लड़का आनत?

नूनू : लड़का अनलनि कि धन। डेढ़ सए बीघा जमीन लड़का माथपर पड़ै छै।

सोमनाथ : अच्छा, छोड़ह दुनियाँदारीक गप। लालबाबूकेँ कर्मनाथक पत्र देखए देलहक।

नूनू : कहाँ। नै!

(नूनू लालबाबूक हाथमे चिट्ठी दैत। लालबाबू चिट्ठी पढ़ए लगैत)

लालबाबू : दिन पनरहम छिऐ। हम चौकेपर गुलटेनक पानक दोकानपर रही। वएह (गुलटेन) कहैत रहए जे मालिक आइसँ पानक खिल्लीमे एक रूपैआ बढ़ा देलिऐ। किएक तँ पानक सभ मसल्ला महग भऽ गेल। तइ बीच एक गोटे साइकिलसँ आएल। साइकिल दोकानेक आगूमे ठाढ़ कऽ गुलटेनकेँ पुछलकै, प्लोथीन अछि। गुलटेन मुस्किया देलकै। ओ कम्पनीक नाम पुछलकै। पानोबला मुड़ी डोला देलकै। किलो भरिक एकटा प्लोथिन बढ़ा देलकै। ओहो बटोही एकटा पचसटकही निकालि दोकानबलाकेँ दऽ देलकै। ठाढ़े-ठाढ़ ओ बटोही गट दे प्लोथिन पीब गेल। पीला पछाति दोकानदारकेँ पुछलकै, कर्मनाथबाबूक घर ऐठामसँ किम्हर छन्हि। हमरो कान ठाढ़ भेल।

सोमनाथ : ओकरा किछु पुछबो केलहक?

लालबाबू : नै। अपने मोने बजए लगल जे कर्मनाथबाबू आ हम्मर भाय साहैब (जेठ भाइ) एक्के ठीन रहै छथि। कमा कऽ हम्मर भाय साहैब अमार लगा देलखिन। हमरा गाममे एक्को गोटे नै अछि जे बेटी बिआहमे एते खरच केने हएत।

नूनू : अपन कर्मनाथ भैया कि रूपैआ नै रखने छथि। तखनि तँ हम सभ दियाद छियनि तँए छिपौने छथि। पाइ रखैक लूरि सभकेँ होइ छै। कियो ढोल जकाँ ढनढ़नाइत रहत आ कियो चुपचाप दबने रहत।

सोमनाथ : पत्रक बात तँ सभ बुझबे केलहक। आब चारू गोटे (बाप-माए, दुनू भाँइ) विचारि लैह जे की करबह?

नूनू : जखनि अहाँ दुनू गोरे (बाप-माए) छिहे तखनि हम सभ की कहब।

सोमनाथ : हमरा तँ साँप-छुछुनरिक पड़ि भऽ गेल अछि। ने, हँ कहैत बनैए आ ने नै कहैत। हँ, कहैत ऐ दुआरे नै बनैए, जे सत पुछह तँ हमर मन कर्मनाथपर सँ ओइ दिन हटि गेल जइ दिन ओ अपना मोने बिआह कऽ लेलक। देखल लक्ष्मी घूमि गेली। खएर, बिआहो केलक तँ केलक जे कमाइओ कऽ तँ एक्को पाइ कहियो नहियेँ देलक। मुदा छी तँ बेटे। तहूमे बेटीक बिआह करत। बेटी तँ सिरिफ माइए-बापक नै होइत ओ तँ सबहक होइत।

आशा : अहाँकेँ अपने मन कखनो थीर नै रहैए। कखनो किछु बजै छी तँ कखनो किछु। अहीं कहू जे जखनि करमू पान सए रूपैआ मनिआडर करैत रहै तखनि चिट्ठीमे लिखि कऽ पठौलिऐ जे पान सए रूपैआसँ चुट्टीक बोहरि मुनब आ आइ कहै छिऐ जे एक्को पाइ नै कहियो देलक। वेचारा नोकरी करैए जएह दरमाहा रहतै तहीमे ने काज चलौत। अनका देखि कऽ करमूओकेँ ओहिना बुझबै से ओहिना ओहो घूस-पेंच लैत हुअए तखनि ने। दुनियाँमे सबहक चालि एक्के रंग होइ छै?

सोमनाथ : औझुका लोकक भाँज अहीं पेबै? केकरा रूपैआ बकछुहुल लगै छै। एक बर लोककेँ दरमाहा रहै छै आ सात बर बाइली होइ छै।

लालबाबू : माए गे, भैयेक एकटा संगी कमा कऽ अमार लगा देलक हेँ। एक्के काज दुनू गोटेकेँ छन्हि।

आशा : बौआ, एकटा बात तोँही सभ कहऽ जे जइ सम्पतिक सुख तूँ सभ करै छहक ओइमे ओकर हिस्सा नै छै? ओकर हिस्सा तँ अपने सभ खाइ छिऐ। ओ कहियो किछो पुछबो केलकह हैं। एतबो आँखिमे पानि नै छह। अगर जँ ओकरा बेटीक बिआहमे खरच नै जुमतै तँ की ओ ऐ सम्पतिमे सँ नै लेत?

लालबाबू : हमरो रहत तब ने देबै। तूँ नै देखै छीही जे साले-साल खेत बेचै छी तखनि कहुना कऽ काज चलैए। ने एकोटा पुरना गाछ गाछीमे रहल आ ने बाधमे खेत। लऽ दऽ कऽ घराड़ी आ घरक आगूमे जे अछि तेतबे रहल हैं, सेहो अपना बुते खेती कएल होइते ने अछि। बटेदारो सभ तेहेन अछि जे दूध महक डारही बाँटि कऽ दइए। मुदा ओहू वेचारा सभकेँ की कहबै, कोनो साल रौदी होइ छै तँ कोनो साल दाही। लगतौ बूड़ि जाइ छै।

आशा : से तँ हमहूँ देखै छिऐ, मुदा रौदी-दाही दुआरे केकरो उचित कल्याण रूकि जेतै। बेटा-बेटीक बिआह सभकेँ हेबे करतै। घर-दुआर बनबए पड़तै। धिया-पुताक पढ़ौनी, बर- बेमारीमे खरच हेबे करतै। तहूमे हम दस कुटुम-परिवारबला छी। एकरा सभकेँ छोरबहक से बनतह। परिवार किए कहौलकै।

सोमनाथ : एते राँउ-झाँउ करैक कोन काज छह बौआ। अन्हार घर साँपे-साँप। जखनि कर्मनाथ औत, बिआहक चरचा करत, तखनि ने पुछबै जे बौआ केना काज करबह। ऐठाम तँ देखते छहक जे जेकरो ने किछु रहै छै, बोइन-बुत्ता करैए, ओहो एकाध लाख रूपैआ बेटी बिआहमे खरच करैए। जबकि अपन परिवार तँ से नै छह। केतबो काटि-छाँटि कऽ बिआह करबह, तैयो दस लाख खरच हेबे करतह। तहूमे अपना सबहक समाज तेहेन गरिबोहू अछि जे एतबो नै बुझैए जे जे माए-बाप बेटीकेँ पढ़बैमे ओते खरच करैए ओकरासँ रूपैआ केना मंगबै। से लाज थोड़े केकरो होइ छै। नम्हर-नम्हर भाषण कऽ लेत मुदा करै काल छुतहरोसँ छुतहर भऽ जाइए। एहेन छुतहरक समाजमे लोक केना जीबत।

भीतरसँ : दादी, दादी, कर्मनाथ कक्का एलखिन।

(आशा उठि कऽ भीतर जाइत। कर्मनाथक परिवार अबैक गल्ल-गुल भीतरमे होइत अछि।)

नूनू : बाबू, हम दुनू भाँइ तँ छोट छी, तहूमे अहाँ जीविते छी। तखनि तँ जे भैया कहता से कऽ देबनि।

सोमनाथ : (मुड़ी डोलबैत) एकटा बात हमरा मोनमे उपकैए।

नूनू : से की?

सोमनाथ : कहीं एहेन ने हुअए जे कर्मनाथ अपन रूपैआ दाबि लिअए आ खेत बेचैले कहथुन। जँ से हेतह तँ हाथो तरक जेतह आ पएरो तरक।

लालबाबू : तखनि की करबै?

सोमनाथ : की करबहक से हमहीं कहबह। आब तहूँ दुनू भाँइ धीगर-पुतगर भेलह, आबो जे नै सोचबहक तँ कहिया सोचबहक। हम तँ सहजहि अथबल भेलियऽ, चलन-पियारा छिअह। हम्मर आशा केते दिन करबह। जाधरि दाना-पानी लिखल अछि ताधरि मुँह देखै छह। जहिया उठि जाएत तहिया चलि जाएब।

(कर्मनाथक प्रवेश। पिताकेँ प्रणाम करैत। लालबाबू आ नूनू कर्मनाथकेँ प्रणाम करैत)

सोमनाथ : (असिरवाद दैत) कल्याण हुअ। बौआ, आब तँ हम्मर हालत एते रद्दी भऽ गेल जे मुइले बूझह। छह माससँ डाक्टर सभ किछु बरा देलक। जअ केर फाँटी खाइ छी, तँए अखनो ठाढ़ छी। नै तँ कहिया ने चलि गेल रहितौं। सौंसे देह जाँचि कऽ डाक्टर कहलक जे रोग जड़िसँ नै मेटाएत, तखनि तँ पथ-पानि करैत रहू। मन भेल जे सवा लाख महादेवक पूजा करा कऽ सेहो देखिऐ। मुदा आइ-काल्हि करै छी, ओहो अखैन धरि नहियेँ केलौं हेँ। सभ परिवार आनन्दसँ छह किने?

कर्मनाथ : हँ। सभ आनन्दसँ छी। दू मास पहिने हमरो परमोशन भेल। चम्पो बी.ए. कऽ लेलक। बड़बढ़ियाँ नम्बर एलै। फुलेसर बी.ए. मे, आ जुही मैट्रिकमे पढ़ैए।

सोमनाथ : (हँसैत) परमोशन भेलह तँ दरमहो बढ़ल हेतह किने?

कर्मनाथ : हँ। अढ़ाइ सए टाका महिना बढ़ल। मुदा तइसँ की जिनगीमे कोनो बदलाव औत।

सोमनाथ : (अकचकाइत) से की?

कर्मनाथ : दरमाहा जे बनल छै ओ परिवार आ पदकेँ स्तरक हिसाबसँ बनल छै। तहूमे इनकम-टेक्स ओकरा (दरमाहा) नियंत्रित केने रहै छै। जहिना

दरमाहा बढ़ै छै। तहिना इनकम-टैक्स सेहो बढ़ि जाइ छै। तेतबे नै, मकान भाड़ा, पानि आ बिजलीक खरच सभ बढ़ि जाइ छै। घुमा-फिड़ा कऽ कहुना परिवार चलबैत जीब लइ छी। तीन-तीनटा विद्यार्थीक खरच, शुरूहेसँ रहल, अपनो पढ़ै-लिखैक अभ्यास बनि गेल अछि, तहूमे खरच होइते अछि। तैपरसँ जइ समाजमे रहै छी ओहूमे खरच होइते अछि। ई सभ खरच तँ दरमहेमे से होइए। महिना लगैत-लगैत हाथ साफ भऽ जाइए। साल कहिऔ कि मास, एक्को दिन ओहन नै बँचैए जइ दिन केकरो-ने-केकरो, किछु ने किछु बाँकी नै रहैए। तखनि तँ कहुना जीब लइ छी।

सोमनाथ : तोरोसँ छोट-छोट नोकरी करैबला सबकेँ देखै छिऐ जे कमा कऽ बुर्ज कऽ लइए। से केना कऽ लइए?

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) जहिना शरीरमे रोग होइए तहिना मनोमे रोग होइ छै। जे बात अहाँ कहलौं ओ मनक रोग छी। मुदा सबहक शरीर वा मन रोगाएले होइए, एहनो बात तँ नै अछि।

लालबाबू : भैया, पछबारि गामक एक गोटे छथि, भरिसक अहाँ चिन्हतो हेबनि, जे कमा कऽ अमार लगा लेलनि अछि।

कर्मनाथ : हुनका हमहूँ चिन्है छियनि। हमरासँ एक बैच पाछू छथि। पहिने बेसीकाल डेरापर अबै छला आ हमहूँ हुनका ऐठाम जाइ छेलौं मुदा धीरे-धीरे सम्बन्ध कमैत गेल। आब ने हम हुनका ऐठाम जाइ छी आ ने ओ हमरा ऐठाम अबै छथि। रस्ते-पेरे जँ केतौ भेँट भऽ गेला तँ भेँट गेला।

लालबाबू : भैया, अहाँ जे चम्पा बिआहक सम्बन्धमे चिट्ठी लिखने छेलौं से तँ आब अपनौं आबिए गेलौं। जहिना चम्पा अहाँक बेटी छी तहिना तँ हमरो भतिजीए छी। जेना जे करब तइमे हम सभ कोनो अड़ंगा करब।

कर्मनाथ : अखनि तँ हमहूँ बिआहेक उदेससँ एलौं, तँए दोसर तेसर गप करब नीक नै हएत। मुदा एकटा बात जरूर कहबह जे समए बहुत तेजीसँ बदैल रहल अछि, तँए समए संग अपनोकेँ बदलए पड़तह। जँ से नै बदलबह तँ पौल जेबह। बाबू बूढ़ भेलखुन, केते दिन छथुन तेकर कोनो ठीक नै। मुदा तूँ दुनू भाँइ तँ जवान छह। परिवार बढ़बे करतह, घटतह तँ नै। तँए खरचो बढ़बे करतह। ई तँ तोरा अपने

पुरबए पड़तह। अखनि छोट परिवार छह तखनि तँ खेत बिकाइ छह, आ जखनि खर्चा बढ़तह तखनि केना पुरेबहक।

लालबाबू : हँ, ई तँ ठीके कहलौं। मुदा नोकरीओ तँ अपना हाथमे नै अछि। तखनि की करबै?

कर्मनाथ : नोकरीएकँ सीमा-नांगरि छै जे जे करत ओकर गुजर चलतै आ जे नै करत ओकर गुजर नै चलतै। बहुत रास काज सभ अछि, जेकरा केलासँ धनक उपारजन होइए। जे करैबला अछि ओ तँ नोकरीओ छोड़ि अपन काज ठाढ़ कऽ करैए।

लालबाबू : (मुड़ी डोलबैत) ठीके कहै छी भैया, पाछू घूमि कऽ तकै छी तँ बूझि पड़ैए जे अखनि धरिक समए फुर्र-फाँइमे बीति गेल। आब बूझि पड़ैए जे जीबैले सभकँ मेहनति करए पड़तै।

कर्मनाथ : निचेनमे कोनो दिन नीक जकाँति बुझा देबह। अखनि हमहूँ काजेमे पड़ल छी तँए पहिने ऐ काजकँ निपटबैक अछि।

नूनू : भैया, बेटीक बिआह परिवारक सभसँ भारी काज भऽ गेल अछि। तहूमे जेकरा पाइ-कौड़ीक अभाव छै ओकर तँ इज्जत-आबरू बँचब कठिन भऽ गेल अछि। सभसँ लाजिमी बात समाजमे ई अछि जे बेटी केहनो पढ़ल-लिखल हुअए, शील, गुण, सौन्दर्यसँ पूर्ण किएक ने हुअए मुदा आइ ओकर कोनो मोल नै अछि।

कर्मनाथ : (दृढ़तासँ) बौआ, चम्पाकँ बिआह हेबे करतै। ई हमरा अपन ब्रह्म कहि रहल अछि। जहाँ धरि दहेजक सवाल अछि, ओ हम एक्को पाइ नै देबै। हँ, जे बेवहारिक चलनि अछि ओ तँ पुरबए पड़त।

नूनू : दहेज नै देबै तँ काज (बिआह) हएब कठिन अछि।

कर्मनाथ : जइ समाजमे तूँ दहेजक चलनि देखै छहक, ओ चुतिया समाज छी। ओइ समाजपर हम थूक फेकै छी। मुदा वएह टा समाज नै छिऐ। ओइ समाजसँ हटि दोसरो समाज अछि जे मनुखक समाज छी। जइ समाजमे कियो केकरो अधला नै करैए आ ने केकरो अधला मोनमे अनैए। चम्पाक बिआह ओइ समाजमे हेतै तँए, हमरा दहेजक चिन्ता नै अछि। तखनि तँ सभ दिन समाजसँ हटि कऽ रहलौं, जइसँ अनभुआर थोड़े जरूर छी।

तेसर अंक

(विकास दरबज्जापर प्लास्टिकक डोरीसँ कुरसी बुनैत)

श्रीचन : (भीतरसँ) विकास भाय। यौ, विकास भाय?
(कुरसी बिनब छोड़ि। चकोना होइत, चारूभाग विकास ताकए लगैत)

विकास : के छिअह हौ। (फेर चारूभर तकै लगैत)

श्रीचन : (प्रवेश करैत। कान्हपर कोदरि, हाथमे खुरपी) विकास भाय। यौ विकास भाय।

विकास : श्रीचन। किए एना अपसियाँत होइ छह, की भेलह?

श्रीचन : नाश भऽ गेल। गरदनि कटि गेल।

विकास : (अकचकाइत) की नाश भेलह? मन असथिर कऽ कऽ बाजह।

श्रीचन : ऐसँ एकटा बेटा मरि जाइतए से नीक। मुदा भरल-पुरल चास नाश भेने तँ दू मासक मेहनति बूड़ि गेल।

विकास : एना किए मुहसँ अधला बात निकालै छह।
(कोदरि, खुरपी रखि। दुनू हाथ माथपर लैत, कनैक मुद्रामे श्रीचन)

श्रीचन : भाय कि कहब। भगवानो बड़ धड़कट-बेइमान छथि। किए लोक अपनाकेँ हुनकर सनतान बुझैए। जखनि ओ भगवान छथि तँ सभपर एक रंग नजरि राखथि। से कहाँ रखै छथि। हुनकोमे दूजा-भाव छन्हि। केकरोपर खुशी भऽ कऽ खूब दइ छथिन आ केकरो भोतहा हाँसूसँ गरदनि हलालि दइ छथिन।

विकास : तेना ने तूँ बजै छह जे हम किछु बुझबे ने करै छिअह। कनी खोलि कऽ साफ-साफ बाजह।

श्रीचन : की खोलि कऽ कहब भाय! अहाँ तँ सभटा बुझबे करै छिऐ, तैयो अनठा कऽ पुछै छी।

विकास : अनठा कऽ कहाँ पुछै छिअह। तेना ने तूँ कहै छह जे हम अखनो धरि बौआइते छी। उनटे तोँहि कहै छह जे सभटा अहाँ बुझिते छिऐ। कनी फरिछा कऽ कहऽ ने।

श्रीचन : अहाँ तँ जनिते छी जे हम ने गिरहत छी आ ने बोनिहर। चौदह-पनरह कट्ठा खेत अछि, तहीमे खेतीओ करै छी आ अपना काज नै रहैए तँ

बोइनो करै जाइ छी। पान-सात कट्ठा तरकारी खेती करै छी जइसँ अपनो खाइ छी आ दू-चारि पाइकेँ बेचिओ लइ छी। चारि कट्ठा टमाटरक खेती केने छेलौँ से सभटा गलि गेल। जेना कियो चोरा कऽ नून छीटि देने हुअए, तहिना भऽ गेल।

विकास : टमाटर गलि गेलह तँ हमरा की कहै छह?

श्रीचन : चलु, कनी मधमन्नी चलु।

विकास : किए?

श्रीचन : ओइ बीआबला कम्पनीपर लालीस करबै। अपने तँ कोट-कचहरीक पेंच-पाँच बुझै ने छिऐ, तँए अहाँकेँ संगे लऽ जाएब। ओइ बीआबलाकेँ सिखा देबै जे मर्दक पाला केहेन होइ छै। जाबे ओकरा जहलमे नै ढुकाएब ताबे हमर मन असथिर नै हएत। जँए चारि कट्ठा टमाटर गेल तँए दू हजार आरो जा।

विकास : कनी सेरिया कऽ सभ बात कहऽ।

श्रीचन : दू मास पहिलुका गप छी। जतरा परात झंझारपुर हाट बीआ कीनैले गेलौँ। ओना अपन चिन्हरबो दोकान अछि। मुदा कोन दुरमतिया कपारपर चढ़ि गेल जे ओइ दोकान नै जा हाटे दिस बढ़ि गेलौँ।

विकास : अपन चिन्हरबा दोकान किए ने गेलह?

श्रीचन : की कहब भाइ, हाटसँ कनी पाछुए रही आकि बड़का भोमहा-हौरनसँ बीआ-बालिक प्रचार होइत सुनलिऐ। खूब जोर-जोरसँ अमेरिकन कम्पनीक प्रचार करैत रहए। हमरो जेना डोरी लगि गेल। जहिना अजगर साँपक आँखिपर आँखि पड़लासँ होइत, तहिना भोमहाक अवाज हमरा मनकेँ पकड़ि लेलक। आन कोनो चीज देखबे ने करिऐ। जाइत-जाइत हमहूँ ओतए पहुँच गेलौँ। एकटा खूब नम्हर मोटर गाड़ीक ऊपरमे दूटा भोमहा, दुनू भाग घुमा कऽ लगौने रहए। गाड़ीक बगलमे बीआ-बाइलिक खूब नम्हर दोकान सेहो लगौने रहए। ओइ दोकानक चारूभर लोक सभ बैस कऽ बीआक पौकेट सभ देखैत रहए। दू गोटे दुनू भाग बैस कऽ बीआ बेचैत रहै। पाँच गरामसँ लऽ कऽ किलो भरि-भरिक पौकेट सभ रहै। पौकेट सभपर, जइ चीजक बीआ रहै, खूब रंगर फोटो सभ बनल रहै।

विकास : अमेरिकन कम्पनी रहै, से तूँ कन्ना बुझलहक?

श्रीचन : भोमहोसँ प्रचार करै छेलै आ दोकानदारो कहैत रहै।

विकास : देखैमे दोकानदार केहेन रहै?

श्रीचन : एँह, की कहब भाइ; तीनू गोटे एक्के रंग देखैमे लगे। घोरहा रंग, पितरिया आँखि आ मकइया केश तीनूक रहै।

विकास : (छुब्ध होइत) घोरहा रंग, पितरिया आँखि आ मकइया केश...।

श्रीचन : अहाँ नै बुझलिऐ भाय। तीनू एक्के रंग घोर जकाँ (छालही मोहि कऽ घोर बनैत) उज्जर दप-दप। तँए कहलौं घोरहा रंग। अपना सबहक आँखि, केहेन सुन्नर कारी अछि आ ओइ तीनूक आँखि पित्तरि जकाँ देखैमे लगै। तँए कहलौं पितरिया आँखि। आ जहिना मकइ बालिक ऊपरमे जे रूइयाँ जकाँ रहै छै तहिना तीनूक केश देखैमे लगए। अपना सबहक केश केहेन सुन्नर कारी अछि से ओकरा सबहक नै रहए।

विकास : (हँसैत) तीनू मौगी रहै आकि पुरुख?

श्रीचन : यौ भाय, ई हम ठीक-ठीक नै कहब। किएक तँ तीनूक मुहों-कान आ उमेरो एक्के रंग बूझि पड़इ। मोछ-दारही रहितै तखनि ने बुझितिऐ। से तीनूमे केकरो ने रहै। रहबे ने करै आकि कटौने रहै, से नै कहि।

विकास : मोछ-दारही ने रहै, मुदा माथोक केशसँ नै बुझलहक?

श्रीचन : की कहब भाइ, अपना सबहक केश केहेन मरदनमा अछि। स्त्रीगणक केश नम्हर होइ छै, से ओकरा सबहक नै रहए।

विकास : तब केहेन रहए?

श्रीचन : ने मौगियाही केश रहै आ ने मरदनमा। ने बाबरी सीटे जोगर रहै आ ने जुट्टी गुहै जोकर। खोपाक तँ कोनो बाते नै। ओहिना सोझे पाछू मुहेँ उनटौने रहए। जे लटैक कऽ गरदनिए धरि रहए।

विकास : सिनुरो लगौने रहै किने?

श्रीचन : ओह। एक्को गोटे सिनुर नै लगौने रहए।

विकास : आँखि केहेन रहै?

श्रीचन : कहलौं तँ पित्तरि जकाँ बूझि पड़ए। मुदा एक गोरेक आँखि बिलाइ जकाँ चकोना होइत रहै।

विकास : (मुस्की दैत) आँइ हौ श्रीचन, तोँहू जीवनी भऽ कऽ अनाड़ी भऽ गेलह, जे मौगी रहै कि पुरुख से नै बूझि सकलह।

श्रीचन : यौ भाइ की कहब। एक्के रंगक पेन्टो आ अंगो पहिरने रहए। खाली बोलीक अवाजमे कनी फरक बूझि पड़ए। दू गोरेक अवाज कनी मोट (भारी) बूझि पड़े आ एक गोरेक मेही।

विकास : जेकर अवाज मेही रहए ओ केहेन रहए?

श्रीचन : अरे बाप रे, बिलाइक आँखि जकाँ ओकर आँखि चमकबो करै आ नचबो करए। मुदा तेते हाँइ-हाँइ बजै जे बुझैक कोन बात, सेरिया कऽ सुनबो ने करिऐ। हम तँ खाली ओकरे मुहेँ दिस देखिऐ।

विकास : (हँसि) उ तोरा दिस देखह कि अनका दिस।

श्रीचन : ऐ भागसँ ओइ भाग जे आँखि नचबै, तखनि हमरो देखए मुदा बेसी ओ पाइएबला सभ दिस देखै। हम तँ तीनिए साए रूपैआ लऽ कऽ गेल रही। सेहो ढट्ठामे रखने रही। सोचने रही जे एक साएमे बीआ कीनि लेब आ दू साएकेँ घरक चीज-बौस कीनि लेब। किए तँ लोक थोड़े सभ दिन हाट-बजार जाइए।

विकास : बीआ जे किनलहक तेकर रसीदो देलकह।

श्रीचन : हँ। (जेबीसँ रसीद आ बीआक खाली डिब्बा निकालि विकास दिस बढ़बैत) हे, यएह दुनू छी।

विकास : (रसीदो आ पौकेटोमे लिखल मिलबैत) एँह, ओ तँ सोलहन्नी ठकि लेलकह। रसीदमे किछु लिखल छह आ पैकेटमे किछु। तहूमे तूँ कहै छह जे अमेरिकन कम्पनीक प्रचार करै छेलै। तीनू तीन रंगक भऽ जाइ छह।

श्रीचन : (निराश होइत) तब तँ लालीस नै हेतै?

विकास : नै। अगर ऐ सबूतपर केस करबहक तँ अपने फँसि जेबह। उनटे जहल जाए पड़तह।

श्रीचन : हमरे तीन साए रूपैओ ठकि लेलक आ हमहीं जहलो जाएब।

विकास : कानूनक अपन रास्ता छै। जेना कहै छह तेना जे तीनूक मिलान रहितह तँ केशो होइतह। से तँ नै छह।

श्रीचन : तब की करब?

विकास : नीक हेतह जे भरमे-सरम चुपे रहि जाह। नै तँ अनेरे खरचो हेतह, खेतीओ बुड़लह आ जहलो जेबह।

श्रीचन : (गुम्म भऽ मुड़ी डोलबैत) भाइ अहाँक बात तँ हम सभ दिन मानैत एलौं। तँए मानि लइ छी। मुदा हमर मन जरल अछि, जाबे ओकरा या तँ दसटा गारि नै पढ़बै वा दस थापर नै मारबै वा जहल नै ढुकेबै ताबे हमर मन शान्त नै हएत।

विकास : अपना गलतीसँ सभ किछु भेलह। कान पकड़ि लैह जे केकरो लल्लो-चप्पोमे नै पड़ब। एकपर एक ठक दुनियाँमे अछि। अच्छा, एकटा बात कहऽ तँ एना अल्लग-बल्लगमे ठका केना गेलह?

श्रीचन : (कनै-कनै सन) भाइ, बेगरताक मारल मन बौआ गेल। ओना तँ दूटा बेटी अछि, मुदा जेठकी बेटीक बिआह तेसरे सालसँ करैक विचार अछि। तेसराँ बाढ़िमे सभ दहा गेल, तँए नै कए भेल। पौरुकाँ रौदिए भऽ गेल, तँए ने भेल। ऐबेर सोचने छेलौं जे जेना-तेना बेटीक बिआह कइए लेब, मुदा सेहो आशा टूटि गेल। देखते छिऐ जे हमरा सभकेँ बैंकसँ करजो ने भेटैए। गामक महाजनो सभ हाथ-पएर समेटि लेलक। तँए सोचने छेलौं जे जेना-तेना खेतेमे खूब मेहनत कऽ बेटीक बिआह कऽ लेब। से नै भेल। आब किछु फुड़बे ने करैए जे की करब।

विकास : श्रीचन, आशा नै तोड़ह। जखने गरीब भेलह तखने चारू दिससँ बेगरता खिहारबे करतह। मुदा की करबहक। नै ऐ साल बेटीक बिआह हेतह तँ अगिला साल करिहऽ।

श्रीचन : भाय, हएत तँ सएह। मुदा गामक स्त्रीगण सभ कुट्टी-चौल करैए।

विकास : ओहिना स्त्रीगण सभ बजै छै। केकरो बजैमे किछु लगै छै। साहस करह।

श्रीचन : भाय, अपन मन तँ, समए-साल देखि कऽ मानि जाइए मुदा घरवाली हरिदम कनिते रहैए। ओकरा जे कनैत देखै छिऐ तँ अपनो छाती दहलि जाइए।

विकास : से तँ होइते हेतह। एकबेर तमाकू खाह।

श्रीचन : (जेबीसँ तमाकुल-चुन निकालि, तमाकुल चुनबए लगैत) एकटा बात तँ पुछबे ने केलौं। आब मन पड़ल। ओ सभ (अमेरिकन) जे ओहन उज्जर दप-दप लगै छेलै से ओकरा सबहक रंगे ओहिना होइ छै कि चरक फूटल छेलै। किएक तँ अपनो गाममे एक गोरे ओहने अछि। जेकरा नै सभ चरकाहा कहै छै।

विकास : जइ मुलुकमे ओ सभ रहैए, ओइठाम बारहो मास ठंढ़े रहै छै। अपना सभ जकाँ गरमी नै होइ छै तँए ओकरा सबहक रंगे ओहन भऽ जाइ छै।

(तमाकुल खा कऽ श्रीचन विदा हुअ लगैत)

विकास : एकटा बात सुनि लैह श्रीचन। जाबे तक अपना ऐठामक किसान नीक बीआ, नीक खाद, नीक दबाइ (कीटनाशक) बनबैक लूरि अपने नै सीखि लेत, ताबे तक अहिना ठक सभ आबि-आबि ठकैत रहतै। बजैत दुख होइए जे अपन देश किसानक देश छी। मुदा किसानक जिनगी मुरदोसँ बत्तर अछि। ने खेती करैक लूरि किसानकेँ छै आ ने खेतीक उपकरण। ने पटबैक कोनो जोगार छै। धार-धुरक अपन इलाका रहने खेत चौरसो ने अछि। एहेन स्थितिमे लोक केना जीवित रहत?

(श्रीचन जाइए। कर्मनाथक प्रवेश। विकासकेँ प्रणाम करैत)

विकास : आ-हा-हा, बाउ कर्मनाथ। बहुत दिन पछाति तोरासँ भेँट भेल। कहिया गाम ऐलह। सपरिवार आनन्दसँ रहै छह किने। बच्चा सबहक कुशल कहऽ?

कर्मनाथ : सभ आनन्दसँ छी। जेठकी बच्चिया बी.ए. पास केलक। बचबा कौलेजमे आ छोटकी बच्चिया हाइ स्कूलमे पढ़ैए। परसू गाम एलौं।

विकास : बेटी तँ बिआहै जोकर भऽ गेल हेतह?

कर्मनाथ : हँ। वएह सोचि दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं। मुदा ऐठाम जे हवा-बिहाड़ि देखै छी तइसँ मोने घबड़ाइए। आन नोकरिया जकाँ तँ हम्मर जिनगी नै अछि।

विकास : बाउ कर्मनाथ, अखनि धरि तोरा बच्चे जकाँ बुझैत एलियऽ आ आगुओ बुझैत रहबह। भने कहलह जे दहेजक बिहाड़ि समाजमे उठि गेल अछि। अखनि धरि तँ कहियो कोनो काज केलह नै तँए मन घबड़ाएब उचिते छह। मुदा एकटा बात बुझए पड़तह जे हवा-बिहाड़ि जहिना समाजमे उठैए तहिना समाजे ओकरा रोकबो करैए। अज्ञानी, लोभी आ समाज विरोधी लोक ओकरा बढ़बैए। मुदा ऐसँ समझदार लोक थोड़े घबड़ाइए। जहिना एक्के खेतमे बगुरो गाछ रहैए आ नीक-नीक फलोक गाछ रहैए तहिना समाजोमे होइ छै। नीक-सँ-नीक लोक आ अधला-सँ-अधला लोक एक्के समाजमे रहैए। हँ, ई बात जरूर अछि जे कखनो

अधला लोक नीक लोककेँ पछाड़ैए तँ कखनो नीक लोक अधला लोककेँ पछाड़ैए।

कर्मनाथ : जँ अहिना होइत रहत तँ समाज नीक केना बनत?

विकास : अखनि धरिक जे इतिहास अछि ओइ आधारपर नीक लोक पछड़ैत रहल अछि। किएक तँ जइ शक्तिकेँ हाथमे समाज सत्ता रहल ओ धूर्त, बेइमान आ शोषकक हाथमे रहल। तँए ओइ शक्ति संग इमानदार, मेहनती आ भलमानुस लोककेँ संगठित भऽ मुकाबला करए पड़तै। जइसँ उठा-पटक हेबे करतै मुदा अंतिम विजय इमानदारेक होएत। किएक तँ एहेन लोकक संख्यो बेसी अछि आ काजो नीक अछि।

कर्मनाथ : तखनि फेर एना किए होइ छै?

विकास : (मुस्की दैत) कम संख्यामे धूर्त, बेइमानकेँ रहितो, बुधि आ सम्पति ओकरे हाथमे छै। जे दुनू हथियारक रूपमे काज करै छै। कमजोर, मुर्ख अधिक रहितौं अखनि धरि पछड़ैत रहल अछि।

कर्मनाथ : ऐ बातकेँ अखनि छोड़ूँ। हम जइ काजसँ अहाँ लग एलौं तैपर कनी विचार कएल जाए। अपने सिरिफ गुरुए (शिक्षक) नै समाज निर्माता सेहो छी। हम्मर बेटी आइक मनुख छी, नै कि घसल-पिटल परम्पराक। तँए, हमरा मोनमे अटुट बिसवास अछि जे हमरा बेटीक बिआह हँसी-खुशीसँ हेबे करत। मुदा हम तँ समाजसँ सभ दिन अलग रहलौं तँए कनी चिन्ता मोनमे जरूर अछि।

विकास : बौआ, तोरा पितासँ हमरा मतभेद किएक अछि। से पहिने सुनि लैह। तोहर परबाबा जे रहथुन ओ नामी-गामी लोक रहथि। समाजो अनुकूले रहनि आ समैओ तेहने रहए। जहिना हुनका धन-सम्पति रहनि तहिना मानो-प्रतिष्ठा। जखनि ओ मुइला तँ मास दिन धरि सराधक भोज होइते रहलै। हमहूँ ताबे ढेरबे रही मुदा सभ किछु मन अछि। तीस गाम नोति कऽ खुऔल गेल रहए। एक-एक गामकेँ एक-एक दिन। गामक (सभ जातिक) ओइ काजमे जुटल रहए। किएक तँ काजो भारी छेलै। खेनाइक सभ वस्तुक ओरियानसँ लऽ कऽ नोत पठौनाइ आ खुऔनाइ धरिक काज रहए।

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) ई बात हमरा नै बूझल छल। भने अहाँ कहि देलौं।

विकास : करीब पचास-पचपन बरख पहिलुका बात छी। ताधरि गाममे दोसर तरहक विचार चलै छेलै। अखुनका जकाँ लोकमे दूजा-भाव नै छेलै। ओइ समए लोकक जिनगीओ छोट छेलै। तेकर बाद, करीब पैंतीस-चालीस बरख पहिने, तोहर बाबा मरलखुन। हमहूँ शिक्षक भऽ गेल रही। समाजमे विचारो बदलए लगल छेलै। तोहर पिताजी (सोमनाथ) भोज लेल समाजकेँ बैसौलनि। हमहूँ छेलौं। ओ कहलखिन जे नअ गामक जे सौजनियाँ अछि तेते लऽ कऽ भोज करब। किछु गोटे समर्थनो केलकनि। मुदा किछु गोटे विरोधो केलकनि, जइमे हमहूँ छेलौं।

कर्मनाथ : विरोध किए केलियनि?

विकास : (हँसैत) हमरा सबहक (विरोध केनिहरक) विचार छल जे कोनो भोजमे समाजक लोककेँ छोड़ि (आन जातिक) अनगोंआकेँ नोत दऽ खुआएब उचित नै। जेते खरच कऽ भोज करै चाहै छी ओ गौंउएकेँ नोत दऽ कऽ खुआउ। गामक कोनो जाति किएक ने हुअए मुदा छी तँ ओ समाज। समाजक काज हरिदम लोककेँ होइ छै। कोनो बेर बेगरतामे समाजे ठाढ़ होइए। अनगौआँ तँ सिरिफ भोजे खाइए आ खुआबैए। तँए ई काज अधला छी।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) ई तँ वैचारिक मतभेद भेल।

विकास : सिरिफ वैचारिके मतभेद नै, एकरा पाछू वास्तविकतो छै। बेटा-बेटीक बिआह लोक आन गाममे करैए। जइसँ ओ समाज नै, कुटुम होइए। जिनका संग नोत-पिहान चलिते अछि। मुदा आन गामक जातिकेँ समाज मानि खाइ-पीबैक बेवहार बनाएब, उचित नै। हँ, उचित तखनि जखनि समाजक सभ जातिकेँ खुआ, आनो गामक लोककेँ खुआबी। मुदा समाज तँ जीबैतसँ लऽ कऽ मृत्यु धरि संग रहैबला होइत। तँए, आन गामक जातिसँ पैध अपन समाज होइए। जेना केतौ आगि लगै छै तँ समाजेक लोक चाहे कोनो जातिक किएक ने हुअए, आबि कऽ मिझबैए। तहिना कियो बिमार पड़ैए वा कोनो आफत-असमानी होइ छै तँ समाजे आगू अबैए। अही लऽ कऽ दुनू गोटेक बीच मतभेद अछि। मतभेदे नै अछि, एक जाति रहनौं खेनाइओ-पिनाइ बन्न अछि। हमरो

समाज अलग अछि आ हुनको अलग छन्हि। सिरिफ एक गाममे छी तँए गौआँ छिआ।

कर्मनाथ : तखनि तँ गाम दू समाजमे बँटि गेल अछि।

विकास : (दृढ़तासँ) निश्चित। निश्चित दू भाग मे बँटल अछि। एक-समाजक लोक गौआँसँ जुड़ल अछि आ दोसर समाजक लोक अनगौआँ जाति सभसँ जुड़ल अछि। तँए अहाँ ऐठाम जे कोनो भोज होइए तँ हम खाइले नै जाइ छी। आ ने अहाँक परिवार हमरा ऐठाम अबै छथि।

कर्मनाथ : ई तँ जबरदस कारण अछि।

विकास : हमरा संग एहेन समस्या अछि जे जँ अहाँ ऐठाम खाइले जाएब तँ अपन वैचारिक समाज टूटि जाएत। जँ वैचारिक समाज टूटि जाएत तँ फेर ओहिना बिनु जड़ि-पालोक समाजमे मिज्झर भऽ जाएब। जइ समाजमे बलात्कारकेँ धिया-पुताक खेल बूझल जाइए। गारिकेँ मजाक बूझल जाइए आ आर्थिक शोषण माने धनक बेइमानीकेँ परम्पराक चलनि बूझल जाइए।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) हँ, ई तँ होइए।

विकास : आइ धरिक जिनगीमे हम दुइएटा काजक संकल्प कऽ करैत एलौं। आ अखनो करै छी। पहिल, समाजक भोज आ दोसर, बेटा-बेटीक बिआहमे दहेज, ने लेब आ न देब। जे सिरिफ हमहींटा नै, अपन जे समाजक लोक अछि, ओ सभ करैए। अही दुनू काजे तोरा परिवारसँ हमरा मनमुटाउ बुझहक वा पार्टी बुझहक वा दू समाज बुझहक। अच्छा, आब अपना काजपर आबह। तूँ तँ अफसर छह, तखनि किए अफसरक समाज छोड़ि गामक समाजमे कुटुमैती करए चाहै छह?

कर्मनाथ : अफसरक समाज कहिऔ वा नोकरिया, ओ अअस्थाइ होइए। जहिना रबड़क बैलूनमे जाधरि हवा रहैत ताधरि अकासमे उड़ैत मुदा फुटिते केतौ जा कऽ खसि पड़ैत। तहिना नोकरीओक जिनगी होइत। जाधरि नोकरी रहैत, पावरमे रहैत आ नोकरी समाप्त होइतै जिनगी केतएसँ केतए चलि जाइत। मुदा सामाजिक जिनगी से नै होइत। स्थायी होइत। सामाजिक जिनगी बहुआयामी होइत। जहिना गनगुआरिकेँ सैकड़ो पएर होइए, जइमे सँ एकाध-टा टुटनौं कोनो अन्तर नै होइत, तहिना। एकर अतिरिक्तो कारण सभ अछि।

विकास : आरो की कारण अछि?

कर्मनाथ : नोकरी करैबला सिरिफ एक्के इलाकाक नै होइत। जइसँ जिनगीक एहेन अनेको काज अछि जइमे एकरूपता नै होइत। मुदा सामाजिक जिनगी ओइसँ विपरीत होइत। जाधरि हमरो नोकरी अछि ताधरि हमहूँ घरसँ बाहर छी, मुदा नोकरी समाप्त होइते गाम चलि आएब।

विकास : बहुत बढ़ियाँ विचार छह। आइ जे देखै छहक जे गाम घरक दशा दिनो-दिन पछुआएल जा रहल अछि, एकर की कारण अछि। एकर कारण अछि गामक पढ़ल-लिखल लोककेँ गाम छोड़ि कऽ चलि जाएब। जाधरि गामक सम्पतिमे बुधिक उपयोग नै हएत, ताधरि गामक सम्पति नीचे मुहेँ ससरैत जाएत। ओकरा (गामक सम्पति क) आगू मुहेँ बढ़बैले नव ज्ञानक जरूरत अछि। जखने नव ज्ञानक उपयोग गाममे हुअ लगत तखने नव तकनीक, नव लूरि आबि जाएत। नव तकनीक आ नव ढंग नव मनुख पैदा करत। नव मनुख पैदा होइते नव समाज बनि कऽ ठाढ़ भऽ जाएत। जे समैक अनुकूल चलए लगत।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) हूँ-उ-उ।

विकास : एतबे नै, अपना इलाकाक (मिथिलांचलक) जे अमूल्य बेवहार, अमूल्य क्रिया-कलाप अछि, ओ धीरे-धीरे घटि रहल अछि। आ एहेन बूझि पड़ैए जे घटैत-घटैत मेटा जाएत। लोकक जीवन शैली बदैल रहल अछि, जइसँ सामाजिक सम्बन्ध, कला संस्कृति सभ किछु प्रभावित भऽ रहल अछि। नान्हि-नान्हिटा काज, नान्हि-नान्हिटा बातमे लोक तेना ने दिन-राति ओझराएल रहैए जे आगू मुहेँ ससरैक कोन बात जे पाछूऐ मुहेँ ढरैक रहल अछि। जइसँ हरिदम वातावरण दूषित भेल रहैए। अनेरो लोक हरिदम चिन्ता आ तनावमे पड़ल रहैए।

कर्मनाथ : ऐ दिशामे समाजक बुधिजीवी लोकनिकेँ आगू आबए पड़तनि।

विकास : निश्चित। कोनो समाजकेँ आगू बढ़बैले वा गलत दिशासँ सही दिशा दिस लऽ जाइले बुधिजीविए अगुआइ कऽ सकै छथि। जेकरा अपने दिशाक बोध नै छै ओ आगू मुहेँ केना बढ़ि सकैए। ओना पढ़लो-लिखल सभकेँ दिशाक बोध होइते छन्हि, सेहो बात नै। जेना कहल गेल अछि जे पोथीए पढ़ि लोक ज्ञान अर्जित करैए आ पोथीए लोककेँ अज्ञानोक दिशामे बढ़बैए।

कर्मनाथ : (गंभीर होइत) अपने जे बात कहि रहल छी, ओइ दिस हमरो धियान अखनि धरि नै गेल छल।

विकास : (मुस्कीआइत) अखनि धरि तोहर धियान, एक बेवस्थाक बीच रहलह तँए नीक-अधला बेरबैक ज्ञान नै भेलह। किएक तँ बेवस्था बेवहारक माध्यमसँ चलैए।

कर्मनाथ : (मुड़ी डोलबैत) तखनि तँ नीक-अधला बुझैले मनसँ नै विवेकसँ निर्णए कएल जा सकैए।

विकास : निश्चित। ऐमे एक्को पाइ संदेह नै। मन निर्णए करैत बुधिक हिसावसँ। बुधि बनै छै बेवस्थाक हिसावसँ। तँए लोकक जे सोचै छै आ बुझैक प्रक्रिया अछि ओ बेवस्थाक अनुकूल होइए। मुदा बेवस्था केहेन अछि, से ओइसँ आगूक प्रक्रिया छी। हमरा नीक हुअए, ई सभ चाहैए। मुदा अहीक भीतर प्रश्न उठैए जे अपन नीक संग जौं दोसरकेँ अधला होइ, तखनि? नीक तँ तखनि ने नीक जे अपना संग-संग दोसरोक नीक होए। जँ दोसरकेँ नीक नै होइ तँ अधलो नै होइ। हँ, ई बात जरूर जे, किछु काज बेक्तिगतो होइए, जइसँ दोसरकेँ मतलब नै होइत।

कर्मनाथ : (नम्हर साँस छोड़ैत) तब तँ बिआहमे जे दहेजक चलनि अछि, सेहो ओहने अछि।

विकास : (मुस्की दैत) निश्चित। दहेज लेनिहार तीन रंगक अछि। पहिल अछि जे जेते दहेज लइए ओइसँ दोबरा-तेबरा कऽ बजैए। दोसर तरहक अछि जे बेटा बिआहमे जेते दहेज लैत ओइसँ कम बेटीक बिआहमे दइए वा नहियोँ दइक विचारमे रहैए। तेसर तरहक अछि जे दहेज लेलाक बादो छिपबए चाहैए। आब तोँही कहऽ जे एना किए अछि।

कर्मनाथ : एहेन ओझराएल सवालक हल केना होएत?

विकास : (हँसैत) यएह काज तँ हम अपना समाजमे कऽ रहल छी। ऊपरसँ नै बूझि पड़तह मुदा समाजक भीतर समाज बनि चलि रहल अछि। जहिना बेटा तहिना पढ़ौल शिष्य। तूँ हमर पढ़ौल शिष्य छिअह, तँए तोरा हम बिसवास दइ छिअह, हम्मर जे जरूरत तोरा हुअअ, तइले तैयार छिअह। तोहर बेटी हम्मरो तँ पोतीए छी। तोरा हम शुरूहे सँ जनै छिअह जे आन नोकरिया जकाँ तूँ लेन-देनसँ परहेज केने छह।

तोरा एक्को पाइ दहेज कहि खरच नै हेतह। तखनि तँ बेटा-बेटीक बिआह छी। जे बेवहार अदौसँ आबि रहल अछि ओ तँ पुरबै पड़तह।

कर्मनाथ : आइ धरि जे समस्या माथकेँ भरिऔने छल से निकलि गेल। मन हल्लुक भऽ गेल। मुदा एकटा बात कहि दइ छी कक्का, हम तँ नोकरिया छी। गनल दिनक छुट्टी अछि तँए दोहरा कऽ छुट्टी नै लिअए पड़ए। तैपर नजरि रखबै।

विकास : (मुड़ी डोलबैत) हमहूँ नोकरी कऽ चुकल छी तँए छुट्टीक महत बुझै छिऐ। काल्हिएसँ हम तोरा काजक पाछू पड़ि जाएब। परसू फेर भेँट हएब। बेटी किछु विशेष पढ़ल छह तँए काज थोड़े भरिगर जरूर अछि। किएक तँ गाम-घरमे लड़कीक कोन बात जे लड़को कम पढ़ल-लिखल अछि। बी.ए. पास लड़की लेल कम-सँ-कम एम.ए. पास लड़का चाहिऐ। नै तँ इंजीनियर, डाक्टर, वकील तँ चाहबे करिऐ।

कर्मनाथ : आब हम कनी हटि कऽ एकटा सवाल पुछै छी। अखनो आ पहिनौसँ देखैत एलौं जे नीक-सँ-नीक (बेसी स बेसी) पढ़ल लिखल लड़का संग अनपढ़ लड़कीक बिआह होइए वा होइत आएल अछि। ओ उचित बूझल जाइ छै। मुदा अधिक पढ़ल-लिखल वा पढ़ल-लिखल लड़की संग कम पढ़ल वा अनपढ़ लड़का संग बिआह करब, उचित वा अनुचित?

विकास : ऐ प्रश्नक उत्तर दोसर दिन देबह। अखनि हमर मन तोरा काजमे ओझरा गेल अछि।

चारिम अंक

(रामविलासक घर)

रामविलास : जिनगीक साठिम बरखमे आइ बूझि पड़ैए जे निचेन भेलौं सेहो सोलहन्नी नै, पाँच पाइ चिन्ता अखनो बाँकीए अछि। मुदा तैयो आइ अपनाकेँ निचेन मानै छी किएक तँ जहिना एक दिन बितने पूर्वज सौंसे माध बितब मानि लेलनि, तइ हिसाबे तँ पाँच पाइ भार बड़ थोड़ भेल। जिनगीक साठि बरखक रग्गरघस उपरान्त जे फल भेटल ओ तँ सुअदगर आ मीठ हेबे करत, तँए मोनमे खुशी सेहो अछि।

माधुरी : मोनमे खुशी आछि तँ नाचू।

रामविलास : नचै तँ शरीरक भीतर मन अछि। हम कोनो नचनियाँ छी जे मंचपर नाचब। तखनि हँ, एकटा बात मोनमे जरूर उपकैए जे अहाँसँ भरि मन गप करी।

माधुरी : ठीके लोक कहैए जे पुरुखक बात आ गाड़ीक पहिया दुनू बरबरि। जहिना गाड़ीक पहिया घुमैत रहैए तहिना पुरुखोक बात। कहू जे केहेन अकरहर बात बजै छी जे एते दिन दुनू गोरे संग-संग रहलौं मुदा भरि मन गप कहियो ने केलौं।

रामविलास : (मुँह बिजकबैत) अहाँकेँ की होइए जे हम फुसिए कहलौं।

माधुरी : अपना की बूझि पड़ैए जे साँचे कहलौं।

रामविलास : सुआइत लोक कहै छै जे पुरुख आगू बढ़ैत-बढ़ैत चोर-डकैत, लुच्चा, लम्पट सभ बनि गेल मुदा मौगी गोबरक चोत जकाँ ठामक-ठामहि रहि गेल। अहींसँ पुछै छी, कहू काल्हि धरि हम कहिया निचेन भेल छेलौं आ अहाँसँ भरि मन हँसी-खुशीक बात केलौं।

माधुरी : कोन बड़का पहाड़ उनटबै छेलौं जेकरा उलटबैमे साठि बरख लागि गेल।

रामविलास : (गंभीर होइत) बड़ सुन्नर बात कहलौं। सभसँ पहिने ई बात बूझि लिअ जे जहियासँ हम-अहाँ एकठाम भेलौं आ जाधरि नै भेल छेलौं, तँए पहिने दुनू गोटेक बिआहसँ पहलुका बात कहि दइ छी। तेकर बाद

बिआहक उपरान्तक बात कहब। जहिया अहूँ अपना गाममे रहै छेलौं आ हमहूँ अपना गाममे।

माधुरी : अहाँक अपन कोन गाम छल? हम तँ अपन गाम अपन नैहरकेँ बुझै छी।

रामविलास : एतबो ने बुझै छिऐ जे अपन गाम होइए अपना रहने। से जँ नै रहलौं तँ अपन गाम केना भेल? बड़बढ़ियाँ अहाँ अपन नैहरकेँ अपन गाम कहलिऐ। मुदा हमरा तँ अपना गामसँ भगा देलक।

माधुरी : के भगा देलक?

रामविलास : गरीबी भगा देलक। जखनि हम दसे-बारह बरखक छेलौं तखनि बाबू दुखित पड़ला। तीनिए गोरेक परिवार छल, माए-बाबू आ हम। हम ताबे खेलाइते-धुपाइते छेलौं आ धरीए पहिरै छेलौं। दुखसँ बाबूक हालत दिनो-दिन बिगैड़िते जाइत रहनि। असकरे माए बोइनो कऽ कऽ आनए आ बाबूओक सेवा टहल करैत रहए। दिन-राति तंग-तंग रहै छलि। बेवस भऽ एक दिन कहलक जे बौआ गाममे सभ अन्न बेतरे मरि जेबह। गाममे ने कियो काज करौनिहार अछि आ ने अपना कोनो-आए-उपाए छह। तँए केतौ जा कऽ कमा आनह।

माधुरी : गामसँ माइए जाइले कहलनि।

रामविलास : हँ। मुदा ओहो वेचारी की करैत।

माधुरी : गामसँ असकरे केतए गेलिऐ?

रामविलास : असकरे कहाँ गेलिऐ। अपनो गामक आ लग-पासक आनो-आनो गामक लोक सभ साल पटुआ कटैले, धनरोपनी करैले पूभर जाइ छल। ओकरे सबहक संगे हमहूँ गेलौं। तीन दिने मोरंग पहुँचलौं। ताबे कोसी धारमे पुलो ने बनल छेलौं। नाहेपर पार भेलौं। भीमनगरसँ जगबोनी बस चलै छेलै। कोसी पार भऽ कऽ बथनाहामे बस पकड़लौं। जे नेने-नेने जगबोनी पहुँचा देलक। जगबोनीसँ पएरे मोरंग गेलौं। तेसर दिन किरिण डुमैत-डुमैत मोरंग बजार पहुँलौं। ओइ दिन हाटो रहए। हम सभ हाटेपर रही कि एकटा थारू जे दुनू परानी हाट आएल रहए। ओ जे हमरा सभकेँ देखलक तँ बूझि गेल जे पछबड़िया सभ छी। लगमे आबि कऽ कहलक जे ऐ देसवाली भैया हमरा संगे चलह। सभ कियो ओकरे संगे विदा भेलौं। जहाँ हाटसँ निकलए लगलौं कि कहलक जे

भैया तोरा सभकेँ भुख लागल हेतह, किछु खा लैह। दू छिट्टा मुरही आ कचड़ी कीनि कऽ दऽ देलक। सभ कियो गमछाक खोंचड़ि बना मुरही लऽ लेलौं आ खाइते विदा भेलौं। तेसरि साँझमे ओकरा ऐठीम पहुँचलौं। देखैमे तँ ओ अलबटाहे जकाँ बूझि पड़ए, मुदा रहए पूजिगर। आठ जोड़ा बड़द खुट्टापर बन्हने छल।

माधुरी : केते दिन ओकरा ऐठाम रहलिऐ?

रामविलास : दू मास रहलिऐ। एक मास पटुआक काज चललै आ एक मास धनरोपनी।

माधुरी : काजक लूरि केना भेल?

रामविलास : सभकेँ जेना-जेना करैत देखिऐ, तहिना-तहिना हमहूँ करिऐ।

माधुरी : दू मासमे केते कमेलिऐ?

रामविलास : डेढ़-डेढ़ सए रूपैआक फाँट सभकेँ भेलै। ओइमे सँ हम सबा सए रूपैआ गाम पठा देलिऐ आ पच्चीस रूपैआ लऽ कलकत्ता चलि गेलौं। कलकत्ता तँ गेलौं मुदा कियो चिन्हारए रहबे ने करए। बस स्टैण्डमे उतरि एकटा दोकानमे खाइले गेलौं। खाइते रही कि तीन-चारिटा मटिया चाह पीबैले आएल। ओ सभ अपने बोली बजै। हम खेबो करी रही आ ओकरे सभ दिस तकबो करिऐ। हमहूँ हाँइ-हाँइ कऽ खा हाथ धोइ, दोकानदारकेँ पाइ दऽ एक गोरेकेँ कहलिऐ, भाइ हमहूँ काजे करैले एलौं, केतौ जोगार लगा दैह। ओ सभ अपने संगे हमरो नेने गेल।

माधुरी : मटिया सभ काज की करए?

रामविलास : बोरो उधै आ आनो-आनो सामान सभ उधै। ओकरे लाटमे हमहूँ काज करए लगलौं। बरख दिन ओकरे सबहक संगे रहलौं। बरख दिन पछाति ओहो सभ गाम आएल आ हमहूँ एलौं। बर्खे दिनमे केते गोरेसँ चिन्हारए भऽ गेल। गाम आबि एकटा भीतघर बन्हलौं। बाबूओक मन नीक भऽ गेलनि। अपन मासुल लेल रूपैआ रखि अन्न-पानि कीनि कऽ घरमे दऽ देलिऐ आ डेढ़ मास पछाति फेर चलि गेलौं।

माधुरी : फेर मोटिएबला काज करए लगलौं?

रामविलास : हाँ। पाँच बरख धरि मोटिया काज करैत रहलौं। तेकर बाद अहाँ संग बिआह भेल। बिआह पछाति जे कलकत्ता जाइत रही कि दरभंगामे एक गोरे परिवारक संगे हमरे लगमे आबि कऽ बैसिलथि। ओहो कलकत्ते

जाइत रहथि। समस्तीपुर तक हमहूँ चुप्पे-चाप बैसल रही, मुदा ओ सभ अपनामे गप-सप्प करैत रहथि। ताबे समस्तीपुर तक छोटकीए गाड़ी चलै। समस्तीपुरसँ बड़की गाड़ी कलकत्ता जाइ। जखनि समस्तीपुर टीशन लगिचाएत कि ओ हमरा कहलनि, बौआ केतए जेबह। हम कहलियनि, कलकत्ता। ओ कहलनि जे हमहूँ कलकत्ते जाएब। हमरा समानो सभ अछि आ दूटा बच्चो अछि, तँए कनी समस्तीपुर टीशनमे बच्चा सभकेँ सम्हारि दिहऽ। हमहूँ सएह केलौं।

माधुरी : समस्तीपुर टीशनमे जे गाड़ी पकड़लिऐ ओ सोझे कलकत्ता लऽ गेल कि बीचमे केतौ फेर बदलए पड़ल।

रामविलास : नै। बीचमे केतौ नै बदलए पड़ल। समस्तीपुर टीशनमे जे गाड़ीपर बैसलौं, तखनिसँ वएह चाहो पीबथि आ गपो-सप करए लगलौं। ओ अपने इलाकाक रहथि। हिन्द मोटर कारखानामे नोकरी करैत रहथि। इंजीनियर रहथि। देखैमे तँ साधारणे बूझि पड़थि, मुदा ओ साक्षात् देवता छेला। ओ कहलनि जे बौआ तूँ हमरे संगे चलह। हमरे ऐठाम रहिहऽ आ तोरा हम करखन्नेमे काज धरा देबह। तहियासँ हम हुनके ऐठाम रहए लगलौं।

माधुरी : (मुस्की दैत) अखनि धरि बिआहसँ पहुलके जिनगीक बात कहलिऐ।

रामविलास : हँ। बिआह पछाति तँ अहूँ आबिए गेलौं आ देखबे करैत एलिऐ जे सालमे एकबेर महिना दिनक छुट्टीमे अबै छेलौं। तै एक मासमे जे-जेना घरक काज रहै छल ओकरे सम्हरैमे मासो बीति जाइ छल। तखनि आब अहीं कहू जे हम कहिया निचेन भेलौं।

माधुरी : अच्छा, आब अपन खिस्सा-पिहानी छोड़ू। काल्हि तँ बौआक रिजल्ट निकैलिऐ गेल। पढ़ाइओ ओकर समापते भऽ गेलै। आब ओकर बिआह कऽ लिअ।

रामविलास : अपनो मोनमे सएह अछि। मुदा अखनि धरि तँ घरक गार्जन अहाँ रहलौं हम तँ सभ दिन बाहर खटलौं। घरक तीत-मीठ तँ बुझलिऐ नै। आब रिटायर कऽ कऽ एलौं हेँ। आब जे घरक भार उठबए चाहब से हमरा बुते सम्हरत?

माधुरी : कोनो काज केने लोक काज सीखैए। अहाँ केतबो अनाड़ी छी तैयो तँ पुरुखे छी। हम केतबो जीवनी छी तैयो तँ स्त्रीगणे छी। घरक काज सम्हारि सकै छी, मुदा घरसँ बाहरक काज केना सम्हारल हएत।

रामविलास : अहूँक बात एकतरहक जरूर अछि। मुदा आब तँ तीन गोटे भेलौं। मदनोक पढ़ाइ समापते भऽ गेलै। तँए सभसँ पहिने ओकर बिआह कऽ लेब अछि।

(विकासक आगमन)

रामविलास : (हँसैत) आउ-आउ, मास्टर साहैब। अहोभाग्य हम्मर आ हमरा परिवारक। बहु दिन पछाति अपनेसँ भेँट भेल। शरीरसँ स्वस्थ रहै छिऐ किने?

विकास : हँ।

रामविलास : परिवारक सभ आनन्दसँ छथि किने?

विकास : हँ। बेटा हाइ स्कूलमे मास्टरी करैए। अपने तँ आठ साल पहिने रिटायर भऽ गेलौं।

रामविलास : (मुस्कीआइत) वाह, वाह। हमरो मदन एम.कम. केलक। काल्हिए ओकर रिजल्ट निकललै। फस्ट डिवीजन भेलै। (पत्नीसँ) अनासुरती मास्टर साहैब पहुँच गेलथि, भाग्य हम्मर। किएक तँ मास्टरे साहैबक पढ़ौल मदन छियनि, तँए सभसँ पहिने मास्टर साहैबकेँ मिठाइ खुअबियनु।

(माधुरी जाइए)

विकास : मदन कहाँ अछि। बिना असिरवाद देने मिठाइ केना खाएब।

रामविलास : ओ तँ आइए भोरुका गाड़ीसँ दरभंगा गेल। अपन संगीओ-साथी आ प्रोफेसरो सभसँ भेँट करए गेल। भऽ सकैए सँझुका गाड़ीसँ घूमत। नै जँ संगी सबहक संगे सिनेमा देखए लगत तँ काल्हि कखनो औत। हमहूँ पैछला मास रिटायर कऽ गेलौं। मदनेक दुआरे घरक सभ काज जक-थक पड़ल अछि। किएक तँ जाधरि ओ पढ़ै छल ताधरि घरक काजमे केना लगैबितिऐ। मुदा सोचै छी जे सभसँ पहिने ओकर बिआह कऽ ली। ओना अखनि धरि घरो बनौनाइ पछुआएले अछि।

विकास : हँ, हँ, बड़बढ़ियाँ विचार अछि।

रामविलास : एकटा भार मास्टर साहैब अहूँकेँ दइ छी, किएक तँ गाम-घरक (समाजक) बात अपने बुझै नै छी। घन्यवाद घरेवालीकेँ दी जे वेचारी स्त्रीगण रहितौं अखनि धरि घर सम्हारि कऽ चलौलनि। हम तँ जिनगी भरि केवल कमेलौं, ऐसँ बेसी तँ किछु केलौं नै। अपनेकेँ यएह भार दइ छी जे मदनक बिआह करा दिऔ।

विकास : भार तँ बड़बढ़ियाँ देलौं, मुदा...।

रामविलास : मुदा की?

विकास : बेटा-बेटीक बिआह आब विजनेस भऽ गेल अछि। जइसँ हमरा सख्त घृणा अछि। सत्तरि बरखक जिनगीमे, सैकड़ो बिआहक अगुआइ केलौं मुदा एकोटामे लेन-देन नै केलौं। तखनि आब अहीं कहू जे ई भार हमरा उठत?

(प्लेटमे मिठाइ नेने माधुरीक प्रवेश)

रामविलास : मास्सैब, लऽ दऽ कऽ एकटा बेटा अछि, अगर जँ ओकरो बेचिए लेब तखनि मुइला पछाति एक चुरूक पानियोँ के देत। बेचलाहा बेटा जँ देबे करत तँ ओइसँ थोड़े संतोख हएत।

विकास : (मुस्कीआइत) कहलिऐ तँ बड़बढ़ियाँ, मुदा आब लोक थोड़े ई बात बुझैए। आब तँ लोककेँ रूपैआक आगि मोनमे लागि गेल छै। रूपैएकेँ धरम-करम सभ बुझैए। समाजोक एहेन रूखि भऽ गेल छै जे जेकरा रूपैआ छै ओकरे पुछैए आ जेकरा नै छै ओकरा कियो ने पुछैए।

रामविलास : (मुस्कीआइत) मास्सैब, हम अपन बात कहै छी, जाधरि हमहूँ नै बुझै छेलिऐ ताधरि मोनमे हरिदम रूपैएक बात रहै छल। संतोख कऽ एकटा शब्द मात्र बुझै छेलिऐ। मुदा धन्यवाद ओइ इंजीनियर साहैबकेँ दियनि जे आँखिक परदा हटा देलनि। आब रूपैआकेँ एकटा साधन मात्र बुझै छी। जिनगी नै।

विकास : ओ इंजीनियर के छला?

रामविलास : हुनकर घर अपने इलाका छन्हि मुदा बच्चेसँ ओ कलकत्तेमे रहला। ओतै पढ़बो केलनि आ हिन्द मोटरमे नोकरीओ केलनि। बहुत दिनक बात छिऐ, हमहूँ कलकत्ता जाइत रही आ ओहो दरभंगामे गाड़ी पकड़ि जाइत रहथि। गाड़ीएमे भेँट भेला। अपने संगे हमरो लऽ जा पहिने तँ, उठे काजमे घरौलनि मुदा किछुए दिन पछाति हमरो परमानेंट नोकरी

भऽ गेल। हरिदम ओ यएह कहथि जे राविलास गरीबक पूजी मेहनत छिऐ। तँए मेहनतकेँ अपन दोस्त बना कऽ चली। हुनके परसादे हम हेड मिस्त्री भऽ कऽ रिटायर केलौं। मुरुख रहितौं हम कमा कऽ बुर्ज लगा देलिऐ।

विकास : की बुर्ज लगा देलिऐ?

रामविलास : जेना-जेना आमदनी बढ़ैत गेल तेना-तेना अपन कारोबार बढ़बैत गेलौं। जाबे मशीनक ज्ञान नै भेल छल ताबे एकटा सेकेण्ड हेण्ड टैक्सी किनलौं। एकटा ड्राइवरकेँ पचास रूपैआ रोजपर चलबैले दऽ देलिऐ। अपन जे दरमाहा हुअए ओइमे अदहा गाम पठाबी आ अदहा जमा करी। किछुए दिन पछाति पुरना टेक्सीकेँ बेचि नवका कीनि लेलैं। तखनि भड़ो बेसी हुअ लगल। अपनो मिस्त्रीक हेल्परसँ मिस्त्री बनि गेलौं।

विकास : बाह-बाह। तखनि?

रामविलास : जखनि मिस्त्री बनि गेलौं तखनि दरमहो दोबरा गेल। आ गाड़ीकेँ बनौनाइ सीखि लेलौं। आठ घंटा कारखानामे ड्यूटी करी बाँकी समैमे बजारक गाड़ी सभके ठीक करए लगलौं। फेर दोसर टेक्सी लेलौं। ओहो भाड़ापर लगा देलिऐ मन पड़ैए तँ हँसी लगैए। जहिना रूपैआ लेल मन जरल रहै छेलए तहिना रूपैआक बरखा हुअ लगल।

विकास : वाह-वाह। तेकर पछाति?

रामविलास : आमदनी देखि मन हुअ लगल जे कलकत्तेमे जमीन कीनि मकान बना ली। मुदा जखनि हुनका (इंजीनियर के) पुछिलियनि तँ ओ कहलनि जे विचार तँ बड़बढ़ियाँ छह मुदा मुरूखपाना हेतह। अपना इलाका सन दुनियाँमे कोनो इलाका नै अछि। खाली पाइए सभ किछु नै ने छिऐ। ऐठाम ने खेत किनह आ ने मकान बनाबअ। हँ जाबे नोकरी करै छह ताबे किछु टेमप्रोरी कारोबार करै छह तँ करह। मुदा रिटायर भेलापर गाम चलि जइहऽ।

विकास : किए गाम अबैले कहलनि?

रामविलास : हमहूँ ई बात पुछलियनि तँ बुझबैत कहलनि जे देखहक अपन इलाका बजारक हिसाबे बड़ पछुआएल अछि। पछुआएल इलाकामे लोकक आमदनीओ आ जिनगीओ पछुआएले रहै छै। मुदा ऐसँ केकरो घबड़ेबाक

नै चहिऐ। कोनो इलाका अगुआएल अछि ओइठामक लोकक मेहनतिसँ। जँ लोक मेहनत नै कऽ भागत तँ ओ इलाका अगुएतै केना?

विकास : (गंभीर होइत) बड़ पैघ बात कहलनि।

रामविलास : तइ बीच मदन चिट्ठी लिखलक जे बाबू अपने गाम होइत 'राष्ट्रीय राज पथ' (एन.एच.डव्लू) बनि रहल अछि। अपने तँ चिट्ठीओ ने पढ़ल होइए हुनके पढ़ैले देलियनि। चिट्ठी पढ़ि ओ मोने-मन खूब हँसला। कहलनि जे रामविलास अहाँ मिस्त्री छिहे, आब अहाँले कलकत्ता गामे भऽ जाएत। हमरा कोनो अर्थे ने लागल। तखनि ओ बुझा कऽ कहलनि जे नोकरीओ लगिचाएले अछि आ बड़का सड़को बनिए रहल अछि। ठाठसँ ऐठामक सभ गाड़ी बेचि एकटा नम्हरका बस कीनि लेब। ताबे बेटोक पढ़ाइ समाप्ते भऽ जाएत। बेटाकेँ बस दऽ देबै आ अपने एकटा लेथ मशीन कीनि कऽ रोडे साइडमे बैसा देबै। हमहूँ खेत-पथार नै किनलौं। सिरिफ घर लग तीन कट्ठा कीनि लेलौं।

विकास : बड़ सुन्नर विचार अछि।

रामविलास : ओना अखनि सभ काज पछुआएले अछि। ने घर बनेलौं हेँ आ ने बस किनलौं। मुदा तीस लाख रूपैआ हाथमे रखने छी। तहीसँ सभ काज भऽ जाएत। अपनो नोकरीए करै छेलौं आ बेटो पढ़िते छल, तँए केना करितौं। आब पाइक भुख मेटा गेल। दुनियाँ देखैक ढंगो बदैल गेल।

विकास : दुनियाँ देखैक की ढंग बदैल गेल?

रामविलास : जाबे मिस्त्री नै बनल छेलौं आ कम आमदनी छल ताबे जे लोकक हाइ-फाँइ देखिऐ तँ हुअए जे कोन दरिद्राहा भगवान हमरा सभकेँ जनम देने छथि जे सभ दिन सभ चीजक अभाबे रहैए। मुदा जखनि मिस्त्री बनलौं आ आमदनी बढ़ल तहियासँ बूझि पड़ए लगल जे हमरा सन-सन दरिद्र तँ सौंसे दुनियेँ भरल अछि। जइसँ मोनमे संतोषक अंकुर जनमए लगल। आब ओ अंकुर विशाल गाछक रूपमे भऽ गेल अछि। जइसँ आँखिक इजोत सुन्नर होइत गेल। आब बूझि पड़ैए जे दुनियाँ बड़ सुन्नर अछि।

विकास : की सुन्नर?

रामविलास : आब देखै छी जे दुनियाँ, स्वर्गोसँ सुन्नर आ हजारो तीर्थ स्थान मिलौलासँ जेहेन होइत, तहूसँ पवित्र आ पैध अछि। कोनो देवस्थानमे

गनल-गूथल देवताक बास होइत मुदा दुनियाँ रूपी तीर्थ स्थानमे अरबो-अरब देवता बास करैए। किए लोक ऐ देवस्थानसँ हटए चाहत। मोनमे संकल्प शक्तिक जनम भेल। जे संकल्प शक्ति विचारक रास्ता बदैल देलक। जइसँ जिनगी फूलोसँ हल्लुक बनि गेल अछि।

विकास : ई तँ दुनियाँ देखैक नजरि भेल, मुदा अपना जिनगीमे की सभ आएल?

रामविलास : जाधरि जिनगी नै बदलल छल ताधरि कमेनाइ-खेनाइ मात्र बुझै छेलौं। मुदा आब दोसरकेँ मदति करब बुझए लगलौं। अनका हाथे जे अपन मेहनति बेचै छेलौं ओ मेहनत आब अपना काजमे लगबए लगलौं। जइसँ मनक गुलामी मेटा गेल।

विकास : आब अपना काज दिस आउ। जहिना अहाँक लड़का पढ़ल-लिखल छथि तेहने एकटा लड़की हमरो नजरिमे अछि। बी.ए. पास ओ लड़की अछि। शील, स्वभाव, आ गुणक भंडार अछि। शुद्ध लक्ष्मी पात्र। ओहन लड़की भागमन्ते घरमे जनम लइए।

रामविलास : मास्सैब, हम मदनक पिता जरूर छियनि मुदा ज्ञान दइबला गुरु तँ अहीं छियनि। तँए, मदनकेँ अहाँ अपन बेटा बूझि जतए बिआह करा देवनि, हमरा दिससँ एको-पाइ आपति नै। पाइ-कौड़ीक हमरा एको-अना लोभ नै अछि।

विकास : (मोने-मन खुश होइत) देखिऔ ओ लड़की एकटा पैध अफसरक छियनि। ओ अपनो साक्षात् देवता छथि। ओना ओहो हमरे पढ़ौल छथि, तँए हमरापर अटुट बिसवास छन्हि। जे कहबनि से ओ जरूर करता। मुदा आइ-काल्हि देखै छिऐ जे झूठ-फूसक शादी-बिआहमे झगड़ा-झंझटि भऽ जाइ छै। खास कऽ स्त्रीगणक चलैत। जँ से सभ नै हुअए तँ हम ऐ काजमे पड़ब।

रामविलास : मदन तँ अखनि नै अछि, नै तँ अहाँकेँ संग लगा दैतौं। ओना हम कन्यागत नै बरपक्ष छी तँए पहिने पएर केना उठाएब। मुदा अहाँ ऐठाम जेबामे तँ कोनो असोकर्ज नै अछि। चलू हम अहीं संग चलै छी। आ कन्यागतसँ गप-सप्प करा दिअ।

माधुरी : माहटरबाबू, बेटा तँ हमरो छी आ पुतोहुओ हेती, तँए, एकटा बात हमहूँ कहै छी। लोक सभ बजैए जे दुनियाँ बड़ आगू बढ़ि गेलै ई तँ नीक बात। जेते आगू दुनियाँ बढ़तै तेते आगू सभ बढ़त। मुदा हम सभ तँ

मिथिलाक गाममे रहै छी, जैठाम अखनो लोक पएरे नैहर-सासुर करैए। कोनो सौखे तँ नै करैए। अभावमे करैए। शहर-बजारक लोक हवाइ-जहाजपर उड़ैए आ हमरा सबहक सबारी अखनो नाह अछि। तँए, ऐ सभकेँ नजरिमे राखब जरूरी अछि।

विकास : (ठहाका दैत) ई सभ कहैक जरूरत नै अछि। पहिने कहि देलौं जे कन्या लक्ष्मीपात्र छथि। साक्षात् लक्ष्मीक आगमन परिवारमे हाएत।

रामविलास : मास्सैब, शुभ काजमे बिलब नै करक चाही। हमरो कपार परहक, अंतिम भार उतरि जाएत जे पाँच पाइ चिन्ता अछि ओहो मेटा जाएत। तँए हम्मर विचार अछि जे हमहूँ अहाँ संग चलि कऽ सभ बात आइए फरिछा लेब।

पाँचम अंक

(विकासक दरबज्जा। विकास, रामविलास आ तीन चारि गोटे बैसल)

विकास : राधेश्याम, कनी कर्मनाथबाबूकेँ बजौने आबह?

(राधेश्याम जाइए)

रामविलास : केते दूरपर हुनकर घर छन्हि?

विकास : थोड़बे दूरपर छन्हि। लगले चलि औता।

रामविलास : मास्सैब, जखनि ऐठाम धरि आबिए गेलौं तखनि कहुना काजकेँ सलिटिआइए देबै।

विकास : देखियौ, हम तँ अपना भरि परियास करबे करब तखनि तँ...।

(राधेश्याम संग कर्मनाथ अबैत)

विकास : आउ, आउ कर्मनाथबाबू। हमरा तँ होइ छल जे अहाँ गाममे छी कि नै। मुदा संयोग नीक अछि।

कर्मनाथ : अखने हमहूँ मामा गाम (मात्रिक) सँ एलौं। ममो संगे एला हेँ।

विकास : हुनको किए ने संगे नेने एलियनि?

कर्मनाथ : केना नेने अबितियनि। राधेश्याम सोझे कहलक जे विकास कक्का बजौलनि अछि।

विकास : (रामविलासकेँ देखबैत) हिनका तँ अहाँ नै चिन्हैत हेबनि। हिनकर घर सुन्दरपुर छियनि। हिनका एकटा लड़का छन्हि जे ऐबेर एम.कम. केलनि अछि। काल्हिए रिजल्ट निकललनि। ओना ओ लड़का हमरे पढ़ौल छी मुदा किछु दिन पहुलका देखल अछि। मुदा लड़का दिव हेबे करत।

(कर्मनाथ मुस्कीआइए)

रामविलास : रिजल्ट सुनि बौआ पराते भिनसुरका गाड़ी पकड़ि संगी-साथी सभसँ भेँट करैए चलि गेल। भऽ सकैए जे रौतुका गाड़ीसँ आबि जाए, नै जौं संगी साथी संग सिनेमा देखए लगए तँ काल्हि औत।

विकास : रामविलासजी, हिनका (कर्मनाथबाबूकेँ) तँ अहूँ नहियेँ चिन्हैत हेबनि। ईहो हमरे पढ़ौल छथि। मुदा हमरा गामक रत्न छथि। गामक पहिल फूल। बड़का अफसर छथि। भगवान एहेन बेटा सभकेँ देथुन। जेहने

पैघ अफसर तेहने इमानदार। सज्जनक तँ चरचे नै। ओना जिनगी भरि हमहूँ गुरुआइए केलौं। मुदा औझुका शिक्षक सभ जकाँ नै, जे अपनो पढ़ौल विद्यार्थी, सोझहामे सिगरेट, बीड़ी पीबैत रहत आ शिक्षक मुड़ी निच्चाँ कऽ जाइत रहता। आजुक जे छौड़ा-माड़रि सभ भऽ गेल अछि ओ ने माए-बापकेँ आदर करैए आ ने शिक्षककेँ।

रामविलास : (हड़बड़ा कऽ कर्मनाथकेँ प्रणाम करैत, मोने-मन सोचैत जे कहुना कुटुमैती भऽ जाए।) मास्सैब, अहाँकेँ तँ हम कहि देलौं जे भलहिं मदन हम्मर बेटा छी मुदा शिष्य तँ अहींक छी। तँए, मदनपर जेते अधिकार हमर अछि ओइसँ मिसिओ भरि कम अहूँकेँ नै अछि। माए-बाप जनम दइए मुदा जिनगीक रास्ता तँ गुरुए बतबै छथिन।

विकास : (मुस्की दैत) अहाँ दुनू गोटे सोझहामे छी, तँए हमरा किछु बजैत असोकर्ज नहियेँ भऽ रहल अछि। कर्मनाथबाबू, अपने तँ बड़ ज्ञानी लोक छी तँए हम किछु बाजी से हमरा उचित नै बूझि पड़ैए। मुदा दू परिवारक बीचक सम्बन्ध अछि तँए चुप्पो रहब उचित नै।
(कर्मनाथो आ रामविलासो ठहाका मारि हँसैत)
हम दुनू गोटेकेँ परिचय करा देलौं। आब एकटा बात औझका समैक सम्बन्धमे कहि दइ छी।

रामविलास : अबस्स, अबस्स अपने कहि देल जाओ।

विकास : अखुनका समैक सम्बन्धमे कहि रहल छी। अहाँ (कर्मनाथ) जेठरैऐत परिवारक छी जे आब निच्चाँ मुहेँ भऽ रहल अछि। ऊपरसँ निच्चाँ उतरैत आ निच्चाँसँ ऊपर चढ़ैत, एक सीमापर दुनू गोटे (सामाजिक, आर्थिक आ शैक्षणिक) पहुँच गेल छी। तँए, दुनूक बीचमे सम्बन्ध बनब समयानुकूल अछि। रहल बात लड़का-लड़कीक। अपना ऐठामक जे सामाजिक ढर्रा बनि गेल अछि, ओकरा हम झूस (घटी) बुझै छी। किएक तँ मुरुख लड़की संग पढ़ल-लिखल लड़काक बिआहक चलनि अछि। जेकरा सभ कियो नीक बूझि अंगीकारो कऽ नेने छी। मुदा ऐठाम एकटा प्रश्न उठैए जे मुरुख लड़का संग पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआहकेँ नीक मानल जाए वा अधला। मुदा अहाँ दुनूक सम्बन्धमे तँ से बात नहियेँ अछि। तँए, ऐ सम्बन्धमे किछु कहैक जरूरते ने अछि।

हृदैसँ असिरवाद बुझी वा धन्यवाद देव बूझि, हम दुनू गोटेकेँ (मदन आ चम्पा) दइ छियनि।

रामविलास : (हँसैत) से की?

विकास : जहिना अहाँक मदन रत्न भेला (बोनिहार परिवारक दुआरे) तहिना हम चम्पोकेँ (नारी शिक्षाक) बुझै छियनि। तँए, चाहे रत्नक हार होइ वा फुलक, एकोटाक माला बनैत आ सएओक। मुदा दुनू गरदैनिएमे पहिरल जाइ छी। भलहिं एकक डोरा सबहक नजरिपर पड़ै आ दोसराक झँपाएल होइ।

रामविलास : (हँसैत) मास्सैब, हम तँ मुरुख छी तँए अहाँक सभ बात बुझिओ ने रहल छी, मुदा एते बिसवास मोनमे जरूर अछि जे अहाँ हमर अधला कखनो नै सोचब।

विकास : देखियौ, दुनू गोटेक विचार एक रास्ताक अछि, तँए ऐ सम्बन्धमे किछु अटकलबाजी करब उचित नै। आब काजक गपकेँ आगु बढ़ाउ।

कर्मनाथ : हमरा मोनमे एक्को पाइ ई शंका नै अछि जे हम लड़काकेँ नै देखलौं। मुदा जखनि ऐठाम (हमरा गाम) पहुँच गेल छी तँ कनी हम अपन दुनू भाँइओकेँ बजा लइ छियनि। ऐ दुआरे नै कि हुनकासँ पूछब जरूरी अछि, बल्कि ऐ दुआरे जे हुनको सबहक मोनमे ई नै होन्हि जे भैया हमरा सभकेँ कहबो ने केलनि। तेतबे नै, हम तँ चाहब जे अपना बेटीओकेँ देखा दी।

रामविलास : आइ अहाँक बेटी तँए सभ भार अहाँ ऊपरमे अछि। मुदा बिआहक उपरान्त तँ हमरो पुतोहुए हेती। तँए, जखनि ऐठाम धरि आबिए गेल छी तँ असिरवादो देनै जेबनि।

विकास : (हँसैत) बड़बढ़ियाँ। राधेश्याम, तूँ कनी फेर दोहरा कऽ कर्मनाथबाबू ऐठाम जा दुनू भाँइओ (लालबाबू आ नूनू) आ चम्पोकेँ बजौने आबह।
(राधेश्याम बजबैले जाइत)

कर्मनाथ : कक्का, हम्मर बेटी आइक मनुख छी। सिरिफ पढ़ले-लिखल अछि, तेतबे नै। कमप्युटरक ज्ञान सेहो छै। परिवार चलबैक सभ लूरि छै। आ सभसँ पैघ गुण ई छै जे मिथिलाक सभ बेवहारकेँ, जे नारी लेल अछि तेकर ज्ञाने नै बेवहारमे सेहो छै। ओ सिरिफ कुशल गृहणीए नै अपना पएरपर ठाढ़ भऽ जीवन-यापन करैक लूरिसँ सेहो सम्पन्न अछि।

रामविलास : कर्मनाथबाबू, हम मुरुख रहितौं ओहन विचारवान आदमी लग रहि जिनगी बितेलौं, जिनका हम देवता बुझै छियनि। ओ हमरा अपना पएरपर ठाढ़ भऽ जीबैक लूरि (ज्ञान) सिखा देलनि। हरिदम ओ कहथि जे श्रमिक अपन श्रम पूजीपतिक हाथ बेचि लइए, जे उचित नै। तँए, हम अपन श्रमकेँ अपना काजमे लगेबाक सतत प्रयास करैक चेष्टा करी। ओना हमहूँ जिनगी भरि नोकरीए केलौं किएक तँ एहेन मजबूर परिवारमे जनम भेल छल जे दोसर चारा नै छल। मुदा आब हम एते कमा लेलौं जे अपना परिवारकेँ कहियो नोकरी लेल मुहताज नै होअए पड़त।

(लालबाबू, नूनू आ चम्पाक प्रवेश)

विकास : रामविलासजी यएह बच्चिया छी।

(एकटकसँ रामविलास चम्पाकेँ देखि)

रामविलास : मास्सैब, हमरा पाइक भुख नै मनुखक भुख अछि। (हँसैत) हम अपन बेटेटा नै देब, बिआहोक खरच करब।

कर्मनाथ : (मुस्की दैत) बौआ तोरा दुनू भाँइ (लालबाबू आ नूनू) केँ हम ऐ दुआरे बजौलियऽ जे जहिना बेटी तहिना भतीजी तँए तोहूँ दुनू भाँइ अपन विचार दैह।

दुनू भाँइ : (लालबाबू आ नूनू) भैया, जैठाम अहाँ आ विकास कक्का छी, तैठाम हम सभ की बाजब। अहाँ लोकनिक पसिन हमरो पसिन।

कर्मनाथ : (चम्पासँ) बाउ, गोड़ लगहुन।

(सभसँ पहिने चम्पा विकासकेँ, तेकर बाद अपन पिता कर्मनाथकेँ तेकर बाद रामविलासकेँ गोड़ लगलकनि)

रामविलास : (हजारी नोट दैत) भगवान जिनगी दथि। मास्सैब, भलहिं हम बेटाबला छी मुदा कर्मनाथबाबूक आगूमे किछु नै छी। धन्यवाद अहाँकेँ (विकासबाबू) दइ छी जे कीचड़सँ निकालि सिंहासनपर पहुँचा देलौं।

विकास : रामविलासजी, हम दुनू गोटेसँ आग्रह करब जे शुरूहेक लगनमे काज (बिआह) निपटा लेब।

रामविलास : हमरा दिससँ कोनो आपति नै।

विकास : एकटा बात आरो। अखनि जे लोकक रूखि भऽ गेलैए जे खूब लाम-झामसँ बिआह करैए से नै हेबाक चाही। जेते खरच (चाहे कन्यागतक

होइ वा बड़क पिताक) झूठ-फूसमे करब, ओ बेकार। ओ पइसा जँ बँचा कऽ कोनो काज कऽ लेब तँ ओ जिनगी लेल हएत। हम अपन बात कहै छी, हम्मर जे बिआह भेल छल ओइमे सिरिफ पितेजीटा बरियाती गेल रहथि। तैयो काज भेलै। तँए, कौआसँ खइर लूटाएब, कोनो नीक बात नै।

रामविलास : अपनेक विचारसँ हमहूँ सहमत छी। जेना कर्मनाथबाबू कहता, तहिना करब।

कर्मनाथ : हम्मर कोनो विचार नै, जेना विकास कक्का कहता, तहिना करब।

विकास : बिआहक बात तँ समपन्ने जकाँ भऽ गेल। आब जँ किनको मोनमे किछु बात बाँकी हुअए से अखने बाजि चलू।

कर्मनाथ : हम जइ समाजमे अखनि धरि छी ओइ समाजक बीच तँ बेटीक बिआह नहियेँ कऽ रहल छी, मुदा ओइ समाजमे तँ बहुत अधिक सम्बन्ध (लेन-देन) बनि चुकल अछि। तँए, हम आग्रह करब जे एकबेर, बिआह पछाति, बेटीकेँ अपना संगे लऽ जाएब। ओकरो सखी-बहिनपा छै तेकरो सभसँ भेँट-घाँट कऽ लेत। तेकर बाद तँ अहाँ ऐठाम रहत आ वएह अपन घर हेतै।

विकास : हम नीक जकाँति अहाँक बात बूझि नै सकलौं, कर्मनाथबाबू।

कर्मनाथ : काकाजी, जइ समाज (अफसर समाज) मे रहै छी ओइक बीच पच्चीसो-पच्चास काज (बिआह, मूड़न इत्यादि) सभ साल होइ छै। जइमे हमहूँ आमंत्रित होइ छी। ओइमे हम तँ सिरिफ भोजने करै छी मुदा प्रति काज पाँच सएसँ दू हजार धरि खरच होइए। मुदा हम तँ ओइ समाजसँ अलग भऽ कऽ अपन काज कऽ रहल छी। तँए, ओइ समाजमे रहैले हमरो किछु करए पड़त।

विकास : ओऽऽऽ। हँ ई तँ उचिते छी। की यौ रामविलासजी अहूँकेँ किछु समस्या अछि?

रामविलास : हँ। समस्या तँ हमरो अछि। मुदा हम्मर समस्या दोसर तरहक अछि।

विकास : की?

रामविलास : अपनेकेँ कहिए देने छी जे किछुए दिन पहिने नोकरीसँ निवृत भेलौं आ मदनो पढ़िते छल। मरदा-मरदी कियो घरमे छेलौं नै, जइसँ घरक सभ काज पछुआएल अछि। जेना, घर बनौनाइ, काज सभ ठाढ़ केनाइ,

जइकेँ पुरबैमे कम-सँ-कम छह मास जरूर लगत। अखनि घरो ने अछि, जइमे रहब। तँए हमरो किछु समए चाही। ओना बिआह अखनि कैयो लेब, मुदा जहाँ धरि बिदागरीक सवाल अछि से अगिला साल करब।

विकास : की सभ काज करैक अछि?

रामविलास : (हँसैत) मास्सैब, जाधरि कमाइ छेलौं ताधरि अपनो अनके घरमे रहै छेलौं। बेटो होस्टलेमे रहै छल। सिरिफ पत्नीएटा घरमे रहै छेली तँए, ने बेसी घरक जरूरति छल आ ने बनबैक समए भेटल। आब दुनू बापूत निचेनो भेलौं आ दुनू काजो (नोकरी आ पढ़नाइ) सम्पन्न भऽ गेल। तँए, दुनू ठाम (रहबो लेल आ कारोबार करैले) घरो बनबैक अछि आ कारोबार शुरूह करैक अछि।

विकास : की सभ कारोबार करैक विचार अछि?

रामविलास : सभसँ पहिने रहैले चौघारा घर बनाएब। तीन अलंग आंगन मे रहत आ एक अलंग दरबज्जा रहत। तेकर बाद चौकपर (एन.एच.क बगलमे) तीनटा कोठरी बनबैक अछि। जइमे एकटा कोठरीमे लेथ मशीन बैसाएब। दोसरमे अपन कारोबार (मिस्त्रीआइ) रहत आ तेसरमे बच्चाकेँ ऑफिसनुमा बना देबै, जइमे ओ अपन कारोबारक हिसाव-किताब राखत।

विकास : वाह, बड़ सुन्नर योजना अछि। तेकर बाद की करब?

रामविलास : घर बनौला पछाति दुनू बापूत कलकत्ता जाएब। ओतुक्के बैंकमे रूपैओ अछि। रूपैआ उठा इंजीनियर साहैबकेँ संग कऽ एकटा बस बेटा लेल किनब। अपना लेल मशीन आ जखनि पुतोहु कम्प्युटर सीखने छथि तँ हिनका लेल एकटा कम्प्युटर किनब। तेकर बाद जे रूपैआ उगरत ओहो आ सभ सामानो बसेमे लादि कऽ लऽ आनब। ऐ सभ काज करैमे छह माससँ बेसीए लागि जाएत।

विकास : काज तँ बहुत अछि। बड़बढ़ियाँ नै छह मास तँ साल भरिमे सभ काज भइए जाएत।

रामविलास : हँ, से किए ने हएत।

विकास : भने दुनू गोटे, ऐ साल भरिमे अपन-अपन काज साल भरिक भीतर पूर्ति कऽ लेब। बिआह तँ अखनि कइए लिअ, विदागरी अगिला साल

करब। मुदा दुरागमनोक विधि समपन्ने कऽ लेब। अखनि कनियाँकेँ अपन सीमा पार कऽ घूमा लेब। बिआहक काज तँ समपन्ने बुझू।

समाप्त।

परिचए-

जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म- ५ जुलाइ १९४७

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल, माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी, पत्नी- श्रीमती रामसखी देवी, पुत्र- सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल। मातृक- मनसारा, घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल- ०९९३१६५४७४२

शिक्षा- एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह ''तरेगन'' लेल बाल साहित्य विदेह सम्मान २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति-

उपन्यास-

(१) मौलाइल गाछक फूल (२००९),

(२) उत्थान-पतन (२००९),

(३) जिनगीक जीत (२००९),

(४) जीवन-मरण (२०१०),

(५) जीवन संघर्ष (२०१०),

(६) सधबा-विधवा (२०१३),

(७) बड़की बहिन (२०१३),

(८) नै धाड़ैए (२०१३)

नाटक-

(१) मिथिलाक बेटी (२००९),

(२) कम्प्रोमाइज (२०१०),

(३) झमेलिया बिआह (२०१२)

(४) रत्नाकर डकैत (२०१३)

(५) स्वयंवर (२०१३)

लघुकथा संग्रह-

(१) गामक जिनगी (२००९),

(२) अर्द्धांगिनी... सरोजनी... सुभद्र... भाइक सिनेह इत्यादि (२०१२),

(३) सतभैंया पोखरि (२०१२)

(४) उलबा चाउर (२०१३)

बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह-

(१) तरेगन (२०१०)

विहनि कथा संग्रह-

बजन्ता-बुझन्ता (२०१२)

एकांकी संग्रह-

(१) पंचवटी (२०१२)

दीर्घकथा संग्रह-

(1) शंभुदास (२०१२)

कविता संग्रह-

(१) इंद्रधनुषी अकास (२०१२),

(२) राति-दिन (२०१२),

(३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह-

(१) गीतांजलि (२०१२),

(२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१२),

(३) सरिता (२०१३)